

Bt

Page	_____
Date	_____

Session :- 2016-2017

A.S. College of Education, Kalal
Majra Khanna

Subject :- S.S.t

Topic :- Consumer Rights

Submitted To

Prof. Shilpy Arora

Submitted by

Name Jaswinder Kaur

Class B.ED. II Sem.

Rollno. 275

Rights of Consumers

मुख्य धाराओं के तहत निम्नलिखित अधिकारों को तब तक मान्यता दी जाएगी जब तक कि निम्नलिखित शर्तों को पूरा किया जा सके।

1. सुरक्षा का अधिकार: यह अधिकार है कि किसी भी वस्तु या सेवा का उपयोग करने में किसी भी प्रकार का नुकसान न हो।

2. सूचना का अधिकार: उपभोक्ता को खरीदने से पहले सही और संपूर्ण जानकारी मिलनी चाहिए।

3. चुनने का अधिकार: उपभोक्ता को अपनी आवश्यकतानुसार किसी भी वस्तु या सेवा को खरीदने या न खरीदने का अधिकार होना चाहिए।

4. सुनिश्चितता का अधिकार: उपभोक्ता को खरीदने की वस्तु या सेवा का गुणवत्ता और मूल्य का अनुपात मिलना चाहिए।

5. शिकायतों का अधिकार: उपभोक्ता को खरीदने की वस्तु या सेवा में किसी भी त्रुटि का पता चलने पर शिकायत दर्ज कराने का अधिकार होना चाहिए।

उपरोक्त अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए उपभोक्ता को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

1. खरीदने से पहले वस्तु या सेवा का गुणवत्ता जांचें।

2. खरीदने से पहले सही और संपूर्ण जानकारी लें।

3. खरीदने से पहले मूल्य और गुणवत्ता का अनुपात जांचें।

4. खरीदने से पहले शिकायतों का अधिकार जानें।

5. खरीदने से पहले सुरक्षा का अधिकार जानें।

सुरक्षा का अधिकार: - उपभोक्ता को खरीदने की वस्तु या सेवा में किसी भी प्रकार का नुकसान न होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर, यदि कोई उपभोक्ता किसी ब्रांड का सामान खरीदता है, तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सामान सुरक्षित है और इसमें कोई भी त्रुटि नहीं है।

सूचना का अधिकार: - उपभोक्ता को खरीदने से पहले सही और संपूर्ण जानकारी मिलनी चाहिए।

उदाहरण के तौर पर, यदि कोई उपभोक्ता किसी ब्रांड का सामान खरीदता है, तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सामान सुरक्षित है और इसमें कोई भी त्रुटि नहीं है।

चुनने का अधिकार: - उपभोक्ता को अपनी आवश्यकतानुसार किसी भी वस्तु या सेवा को खरीदने या न खरीदने का अधिकार होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर, यदि कोई उपभोक्ता किसी ब्रांड का सामान खरीदता है, तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सामान सुरक्षित है और इसमें कोई भी त्रुटि नहीं है।

सुनिश्चितता का अधिकार: - उपभोक्ता को खरीदने की वस्तु या सेवा का गुणवत्ता और मूल्य का अनुपात मिलना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर, यदि कोई उपभोक्ता किसी ब्रांड का सामान खरीदता है, तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सामान सुरक्षित है और इसमें कोई भी त्रुटि नहीं है।

शिकायतों का अधिकार: - उपभोक्ता को खरीदने की वस्तु या सेवा में किसी भी त्रुटि का पता चलने पर शिकायत दर्ज कराने का अधिकार होना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर, यदि कोई उपभोक्ता किसी ब्रांड का सामान खरीदता है, तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सामान सुरक्षित है और इसमें कोई भी त्रुटि नहीं है।

विद्यार्थ कठ य ऋषिवाः :-

महर्षिभूत ह्यार सां मेनह रै
द्विप द्विपेनी नु मापही मिशरिउ य द्विद्यार्थ कठ य
ऋषिवाः प्रपुत नु नै । नैव द्विपेनी रै द्विउ नु
गदी गेथै नु तां द्वि द्विपेनी ह्युतु रै द्विवाडा
उ नै गदी प्रुडी य मुमाध्या रै नै सवय नै ।

महदायी य ऋषिवाः :-

महदायी रै ऋषिवाः उं उादु नै
नै द्विपेनी रै द्विउ नै रै नै उं महदायी नै ।
द्विम ऋषिवाः द्विउ द्विपे नै मिशरिउां कठ य नै
यै नैमिउ नै । नैव द्विपेनी सां नैदा द्विउ नै
नै नै तां द्विम उादु नैमिउ नै मिशरिउा ह्युतु
नैवाही ह्युतु नैमिउां साद्विनां साद्विनां नै ।
उह रैयै नैमिउां नै द्विपेनी नैमिउा मिशरिउा
नैह नैयै द्विपेनी नैदा नैव नैवापिउ नैउे नैउे
नै ।

मिषिवाः मिषिवाः उं य ऋषिवाः :-

द्विपेनी नै द्विपेनी नै
मिषिवाः प्रपुत कठ य ऋषिवाः नै । द्विपेनी मिषिवाः
द्वि द्विपेनी ऋषिवाः, मिशरिउ - द्विद्यार्थ नैमिउा
नैमिउा रै साद्विनां नैमिउा नै । नैव नै उं नैमिउा
नैमिउा द्विपेनी नै मिषिवाः कठ य रैम नैव नैउे ।
द्विम नैयै नै नैमिउा नैउे, नैमिउा, नैमिउा नैमिउा
नैमिउा द्विउ द्विपेनी नैयै नैमिउा नैमिउा नैउे
नैमिउा नैमिउा, नैमिउा य नैमिउा नैव नैमिउा
मिषिवाः प्रपुत नैव नै ।

ਪ੍ਰਿਯੋਗਤਾ ਦਾ ਸੋਮਾ

ਪ੍ਰਿਯੋਗਤਾ ਦਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ ਹੈ ਜੋ ਸਾਡੇ ਦਿਲ
 ਪ੍ਰਤੀ ਦਿਨ ਵਧੀ ਸਮਝਣਾ ਦਾ ਸੁਝਾਵਾਂ ਸੁਣਾ ਪੈਣ
 ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਅਭਿਆਸੀ ਗਰੀਬੀ, ਮਿਥਿਸ਼ਾ ਦੀ ਘਾਟ, ਸੁਝਾ
 ਦੀ ਘਾਟ ਕਾਰਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿਖਲਾਈ ਕਾਫ਼ ਕਾਫ਼ੀ ਮਨ
 ਨੂੰ ਸੁਖੀਆਂ ਸੁਖੀਆਂ ਕਰੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗਤਾ ਸਿੱਖਣ
 ਸਮਝ ਸਮਝ ਇਸ ਸਮੇਂ ਬਹੁ-ਕਾਪ ਸਮਝਿ ਗਏ ਸਨ
 ਸਮੇਂ ਵਾਲੀ ਸੁਝਿਆ ਸਮੇਂ ਸਮਝਿਆਂ ਦੀ ਸਮਝਿਆ
 ਹੈ ਸਮਝ ਸਮਝ ਸਮਝ ਸਮਝ ਸਮਝ ਸਮਝ ਓ ਓ
 ਕੀ ਮਨ ਹੈ। ਓ ਸਮਝ ਸਮਝ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਿਖਣ ਸੁਝ
 ਦਾ ਸਿਖਣ ਸਮੇਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੁਝ ਕਰ ਕਰ
 ਸਿਖਣ ਸਿਖਣ ਸਿਖਣ ਸੁਝ ਸਿਖਣ ਸਮੇਂ ਸਿਖਣ ਸਮੇਂ
 ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝੀ ਸਿਖਣ:-

ਪ੍ਰਿਯੋਗਤਾ ਦਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ
 ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਸਮਝ ਸਮਝੀ ਸਿਖਣ ਸਿਖਣ ਸਿਖਣ ਸਿਖਣ
 ਸਮਝਿਤ ਸਮਝੀ ਸਮਝਿਆਂ ਦੀ ਸੁਝੀ ਕਰ ਕਰ
 ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ ਸੋਮਾ ਸਿਖਣ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ
 ਸਮਝ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸੁਝੀ ਕਰ ਕਰ ਸੁਝੀ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝ
 ਸਿਖਣ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝੀ ਸਮੇਂ ਕਰ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝ
 ਸਮਝਾਂ ਸਮਝ ਸਮਝੀ ਕਰ ਕਰ ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ
 ਸਮਝੀ ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝੀ ਸਮਝਿਆਂ ਸਮਝ ਸਮਝ
 ਸਿਖਣ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝ
 ਸਮੇਂ ਸਮਝ ਸਮਝ ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝ
 ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝ
 ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝਿਤ ਸਮਝ ਸਮਝ

विद्यार्थ कठ ए अपिवाः :-

महद्विषय ह्यार सां मेमह रे
 द्विप द्विपेगी के मापही मिवादिउ ए विद्यार्थ कठ ए
 अपिवाः प्रापु रे रे । मेमह द्विपेगी के द्विप रे
 गडी गेथ रे उं के द्विपेगी ह्यार रे विद्यार्थ
 के रे गडी पूठी ए मापही रे रे मेमह रे ।

महद्विषय ए अपिवाः :-

महद्विषय रे अपिवाः उं उाह रे
 रे द्विपेगी के द्विप रे मेमह उं महद्विषय रे ।
 द्विप अपिवाः द्विप द्विप गडे मिवादिउं कठ ए उं
 ए मापही रे । मेमह द्विपार सां मेमह द्विप रे
 कडी गेथ उं द्विप उाह मेमह रे मिवादिउ ह्यार
 द्विपेगी ह्यार मापही सापही सापही गडी
 गडी रे रेपहीमा के द्विपेगी ह्यार मिवादिउ
 महद्विषय द्विपेगी मेमह मेमह अपिवाः रे रे
 उ ।

मिपिवाः मिपिवाः उं ए अपिवाः :-

द्विपेगी के द्विपेगी
 मिपिवाः प्रापु कठ ए अपिवाः रे । द्विपेगी मिपिवाः
 द्विप द्विपेगी अपिवाः, मिवादिउ विद्यार्थ मापही
 गडी रे सापही मापही रे । मेमह उं महद्विषय
 मेमह द्विपेगी के मिपिवाः कठ ए रेम करे उं ।
 द्विप उं के मापही उं, मेमह, रेपही ह्यार
 मेमह द्विपेगी मिपिवाः रे रे मेमह मापही उं
 ह्यार ह्यार, मेमह ए मापही कठ ए द्विपेगी
 मिपिवाः प्रापु करे उं ।

ਮਾਡਰਨ ਯੁੱਗ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ ਉਤਪਾਦਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਦੇਣ ਵਾਲੇ ਪਰਾਸ਼ ਵੈਰੇ ਉਪਕਰਣਾਂ ਨੂੰ ਕਮਾਇ ਕਰੇ ਜਾਣ।

ਕੰਪਿਊਟਰ ਮੈਟਾਫਾ:

ਉਪਕਰਣਾਂ ਦੀ ਕੰਪਿਊਟਰ ਮੈਟਾਫਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਵੱਖ ਵੱਖ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ :-

- (i) ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।
- (ii) ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

ਮੈਟਾ ਫਿਲਟਰ ਸਿਸਟਮ:

ਉਪਕਰਣਾਂ ਦੇ ਕਮਾਇ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ :-

- 1. ਇੱਕ ਸਰਕਟ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।
- 2. ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਸਿਸਟਮ ਵਿੱਚ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਕੇ ਕੰਪਿਊਟਰ ਸਿਸਟਮ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਵਾਂ :-

मकड़िया रीखा :- वही हाठ छिरोडा ह्य हटवल सुभउ उरु
 ह्य रीखा सुभउ उरु उरु । ह्य ह्य रीखा उरु उरु
 समापनी सुभउ उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु

मिमाहट :- ह्य उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु

येसा येसा ह्य हाठी येसा :- उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु

अट उरु ये पुगी :- वही उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु
 उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु उरु

उद्यान

भर प्रथम :- उपभोगदा मरीछा हे रूपां छि मर उ दंडा
 रक्षिणात रस - सुभात री। ये ही. दिगिणापड साणे
 ग्रागर साणे, हे गागवा छि चउत सागरुवडा
 पय रीडी।

गमटरी प्रथमप्रथम :- उपभोगदा मरिचक हे चउत छि
 उपभोगदा मरीछां मरुडे क सदाकां मरुडे छिडां हे छि
 छिडमात रूड मरुवात हळु रिडि रिडाम :-

- 1) उपभोगदा मरीछा म रिडाम
- 2) गमटरी उपभोगदा मरिचक जहा रिडाम।
- 3) गमटरी उपभोगदा मरिचक म मरिगा रिडाम रिडाम।

उपभोगदा रक्षिणात रस
 मीमा मरुड छिडे रे ररुम रिडमाडाडां सां रिड्याउ
 वण्डादां हे इपिम हुगी रीडी सांथे रिड मरु
 हे रसा वरुव उपभोगदा रक्षिणात रस
 घडा रिणा रिणा री।

प्रथम :- उपभोगदादां हे रिडं र मरिचक मरिचक
 मरिचक वरुड छी रिडा हे रिडिणा
 मरिचक सादरा रीडा मरुडे डेकीर रीडी।

दिसा डिसेम्बर ही पुरी कधी उठ मास होय तर ही
15 मार्च ते 31 मार्च तक उपरोक्त दिना
महादिना माने जाते।

उपरोक्त मंडळ :-

उक्त उक्त काळात उक्त उपरोक्त
मंडळ उठे। हे ही दिनांक हे उपरोक्त
ही मंडळीत मंडळ देखावे हे वाढी कोणा
दिनांक हे। हे ही दिनांक हे उठे।

1) Consumer's Guidance Society in India, Bombay

2) Common Cause, New Delhi

3) Consumer's Action, Forum, Kolkata Delhi
and Chennai

4) Voice, New Delhi.

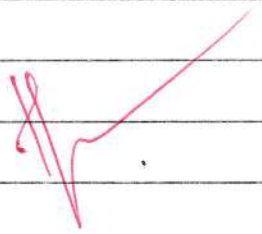
उपरोक्त वस्तु :-

उपरोक्त वस्तु ही मंडळीत
2002 हे ही गुरी। हे ही वस्तु हे
मिनिमम मंडळ हे मंडळीत हे। मिनिमम
मंडळ 2006 हे मंडळ उठे उठे हे 400।
उपरोक्त वस्तु हे मंडळीत हे।

निर्देश :-

यह उपकरणों के माध्यम से कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए है।
 यह किसानों को उचित ऋण प्रदान करता है, जिससे वे अपने खेतों को
 बेहतर ढंग से देखभाल कर सकते हैं। इससे किसानों की आय में वृद्धि
 आती है और वे अपने परिवारों को बेहतर जीवन शैली प्रदान कर सकते हैं।
 यह किसानों को बाजार से जोड़ता है, जिससे वे अपने उत्पादों को बेहतर
 कीमतों पर बेच सकते हैं। यह किसानों को सूचना प्रदान करता है कि वे
 किस चीज को बेचना चाहिए और किस कीमत पर। यह किसानों को
 बाजार से जोड़ता है, जिससे वे अपने उत्पादों को बेहतर कीमतों पर
 बेच सकते हैं। यह किसानों को सूचना प्रदान करता है कि वे किस चीज को
 बेचना चाहिए और किस कीमत पर। यह किसानों को बाजार से जोड़ता है,

Reference book :- Teaching of Economic (Mammabhai Kaur)



Topic — Maps, charts, Globe, Graphs, Models, Realia and Specimens and Multimedia as teaching aids in Social Studies

Subject — Social Studies

Submitted To:

Mrs. Shilpy Arora

Submitted By:

Sapna

Roll No - 477

B.Ed I

Sem - I

A

Maps, Charts, Globes, Graphs, Models, Realia

Specimens And Multimedia in Social Study

Teaching

Introduction — A map can be simply defined as a graphic representation of the real world. This representation is always an abstraction of reality. Because of the infinite nature of our Universe it is impossible to capture all of the complexity found in the real world. For example, topographic maps abstract the three dimensional real world at a reduced scale on a two-dimensional plane of paper.

Maps are used to display both cultural and physical features of the environment. Standard topographic maps show a variety of information including roads, land-use classification, elevation, rivers and other water bodies, political

Teacher's Signature.....

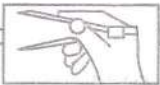
boundaries and the identification of houses and other types of buildings. Some maps are created with very specific goals in mind.

Maps

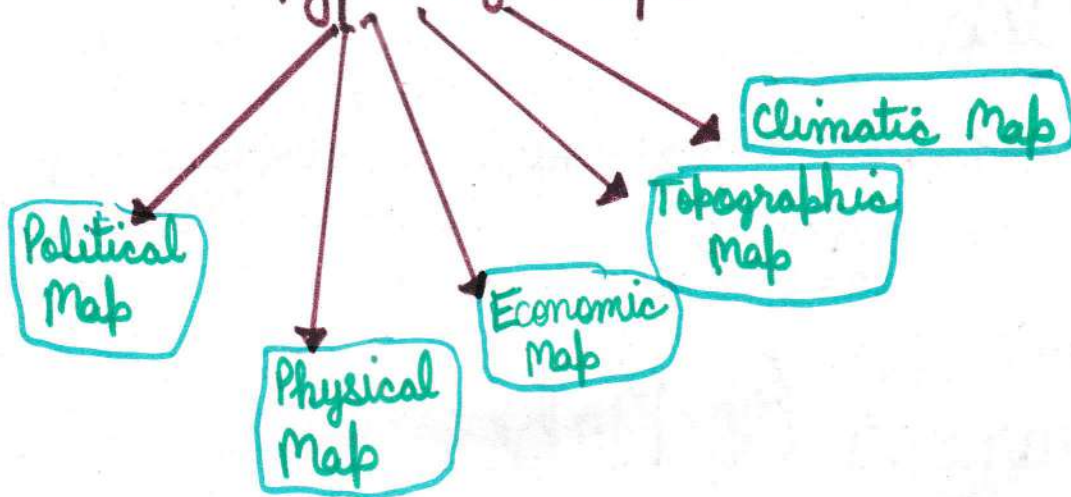
Introduction - Map are is a symbolic depiction emphasizing relationships between elements of some space, such as object, regions, or themes.

Meaning Of Maps

A map is a visual representation of an entire area or a part of an area, typically represented on a flat surface. The work of a map is to illustrate specific and detailed features of a particular area, most frequently used to illustrate geography. There are many kinds of maps; static, two-dimensional, three dimensional, dynamic and even interactive. Maps attempt to represent various things like political boundaries, physical features, roads, topography, population, climates, natural resources and economic activities.



Types of Maps



Types Of Maps

Political Maps

These maps represent the political subdivisions of various regions of the world. Besides focusing on the state and national boundaries of geographical regions, it also shows locations of cities - both large and small. Political maps are broadly divided into general and specialized maps. The general political maps show the location of countries and regions of national and global importance.

Physical Maps

These are more complex and meticulously designed maps as they represent different landscape features mountains, rivers, lakes, forested areas and other prominent physical features of a region. Mountains and elevation changes are usually shown with different colors. For example, places with lower elevations are generally marked in various shades of green. Different gradients of brown are used to depict places with higher elevations. Waterbodies are always shown in blue.

Economic Maps

These are topical maps that depict different economic phenomena taking place in a particular region. These maps are widely referred for planning and forecasting the development and management of a region's economy. The economic maps illustrate economic regions, levels of development and specialization of production.

Topographic Maps

Topographic Maps have come a long way from being restricted to a tool that accurately determines the elevation of a geographical area. Modern maps are detailed graphical representations of both natural and man-made features such as buildings, railways, airports, rivers, mountains, valleys etc. These maps use contour lines to show changes in the landscape.

Climatic Maps

The territorial distribution of climatic conditions is reflected in climatic maps. These maps are prepared based on long term observations of climatic patterns in a large region. Climatic maps not only highlight individual climatic features like temperature, precipitation, cloud cover and atmospheric pressure over regions but also depict different climatic zones of the earth illustrated with colors to highlight their differences.

Basic characteristics Of Maps

- All maps are concerned with two primary elements
 - location and attributes
- All maps are reductions of reality
 - scale
- All maps are transformations of space
 - map projections and coordinate systems
- All maps are abstractions of reality
 - generalization and its components
- All maps use sign and symbolism
 - categoric symbolization

Purposes Of Maps

- The look of a map depends largely on its intended use and intended audience
 - examples
 - 1) store geographic information
 - 2) aid navigation or mobility
 - 3) aid analysis, such as measuring or computer
 - 4) summarize large amounts of statistical data for forecasting or detecting trends.
 - 5) Visualize what was otherwise ~~or~~ invisible:

Uses Of Maps

A basic paper map is the simplest, most reliable and most effective way to find your location and navigate somewhere else. But, in the age of GIS and Google Maps, many people have forgotten how to use one.

Charts

Introduction — Chart pattern analysis can be used to make short-term or long term forecasts. The data can be intraday, daily, weekly or monthly and the patterns can be as short as one day or as long as many years. Gaps and outside reversals may form in one trading session, while broadening tops and dormant bottoms may require many months to form.

Meaning Of Chart

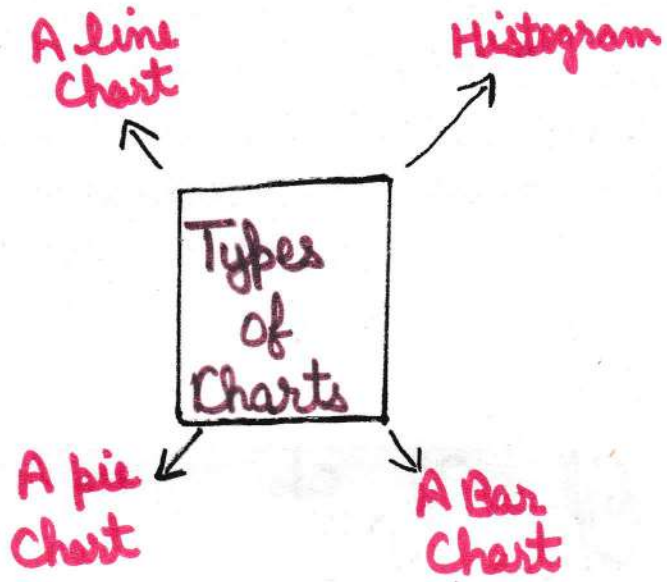
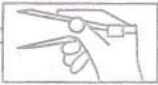
A chart, also called a graph, is a graphical representation of data, in which "the data is represented by symbols, such as bars in a bar chart, lines in a line chart, or slices in a pie chart. A chart can represent tabular numeric data, functions of or some kinds of qualitative structure and provides different information information."

Features Of Chart

A chart can take a large variety of forms, however there are common features that provide the chart with its ability to extract meaning from data.

Typically the data in a chart is represented graphically, since humans are generally able to infer meaning from pictures quicker than from text. Text is generally used only to annotate the data.

One of the most important uses of text in a graph is the title. A graph's title usually appears above the main graphic and provides a succinct description of what the data in the graph



refers to.

Types Of Chart

There are four of the most common charts are:

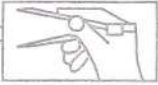
- Histogram — A histogram consists of tabular frequencies, shown as adjacent rectangles, erected over discrete intervals, with an area equal to the frequency of the observations in the interval.
- A Bar Chart — A bar chart is a chart with rectangular bars with lengths proportional to the values that they represent. The bars can be plotted vertically or horizontally.
- A pie chart — A pie chart percentage values as a slice of a pie; first introduced by William Playfair.
- A line Chart — A line chart is a two-dimensional scatterplot of ordered observations where the observations are connected following their order.

Purposes Of Chart

The purpose of charting is to gather and record ideas or information. Charts can be displayed over time as support for review of strategies, collected examples for reference, or other information.

Globe

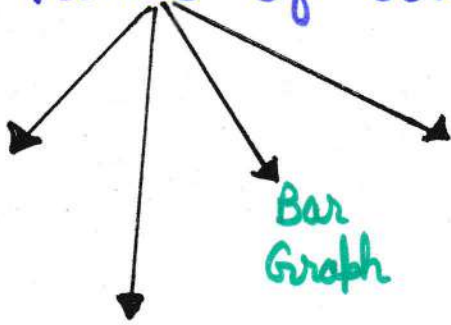
Introduction— A globe is a three dimensional, spherical, scale model of Earth or other celestial body such as a planet or moon. While models can be made of objects with arbitrary or irregular shapes, the term globe is used only for models of objects that are approximately spherical. The word "globe" comes from the Latin word *globus*, meaning round mass or sphere. Some terrestrial globes include relief to show mountains and other features on the Earth's surface.



Kinds Of Graphs

Line
Graph

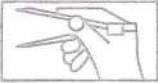
Bar
Graph



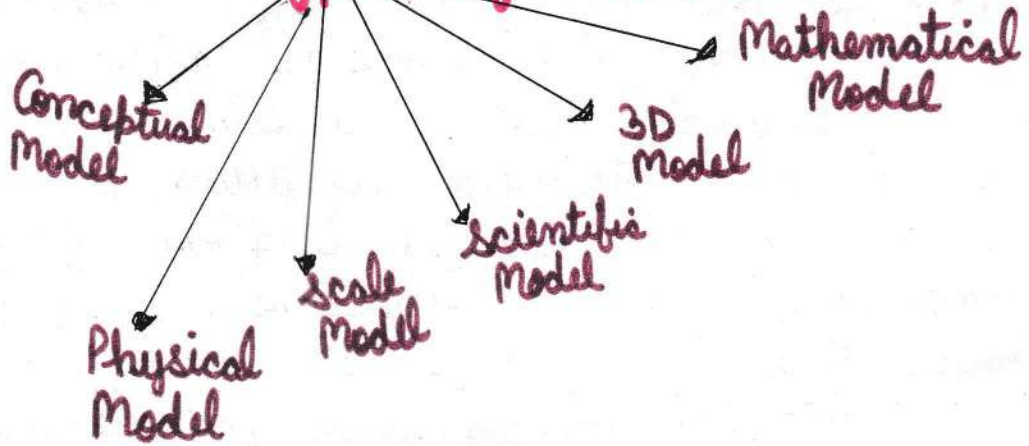
Graphs

Introduction— Graph is a program designed to draw graphs of mathematical functions in a coordinate system and similar things. The program is a standard windows program with menus and dialogs. The program is capable of drawing standard functions, parametric functions, polar functions, tangents, point series, shadings and relations. It is also possible to evaluate a function for a given point, trace a graph with the mouse and much more.

Kinds of Graphs



Types of Model



Model

Introduction— A model is a description of a system using mathematical concepts and language. Models are used in the natural sciences (such as physics, biology, Earth science, meteorology) and engineering disciplines (such as computer science, artificial intelligence) as well as in the social sciences. Physicists, engineers, statisticians, operations research analysts and economists use mathematical models most. A model may help to explain a system and to study the effects of different components, and to make predictions about behaviour.

Types Of Model

- **Conceptual Model**— Conceptual model, a representation of a system using general rules and concepts.
- **Physical Model**— Physical model or plastic model, a physical representation in three dimensions of an object, such as a globe or model airplane.

- Scale Model — Scale model, a physical representation of an object which maintains general relationships between its constituent aspects.
- Scientific Model — Scientific model, a simplified and idealized understanding of physical systems.
- 3D Model — 3D model, a representation of any three dimensional surface via specialized software.
- Mathematical Model — a representation of a system using mathematical concepts and language.

A.S COLLEGE OF EDUCATION KHANNA

SUBJECT NAME - READING AND REFLECTING
ON TEXT

TOPIC NAME - METHOD AND IMPORTANCE OF
READING

SESSION - 2019-21

SEMESTER - 3rd

SUBMITTED TO - PRO. HARNEET KAUR

SUBMITTED BY - RANDEEP KAUR

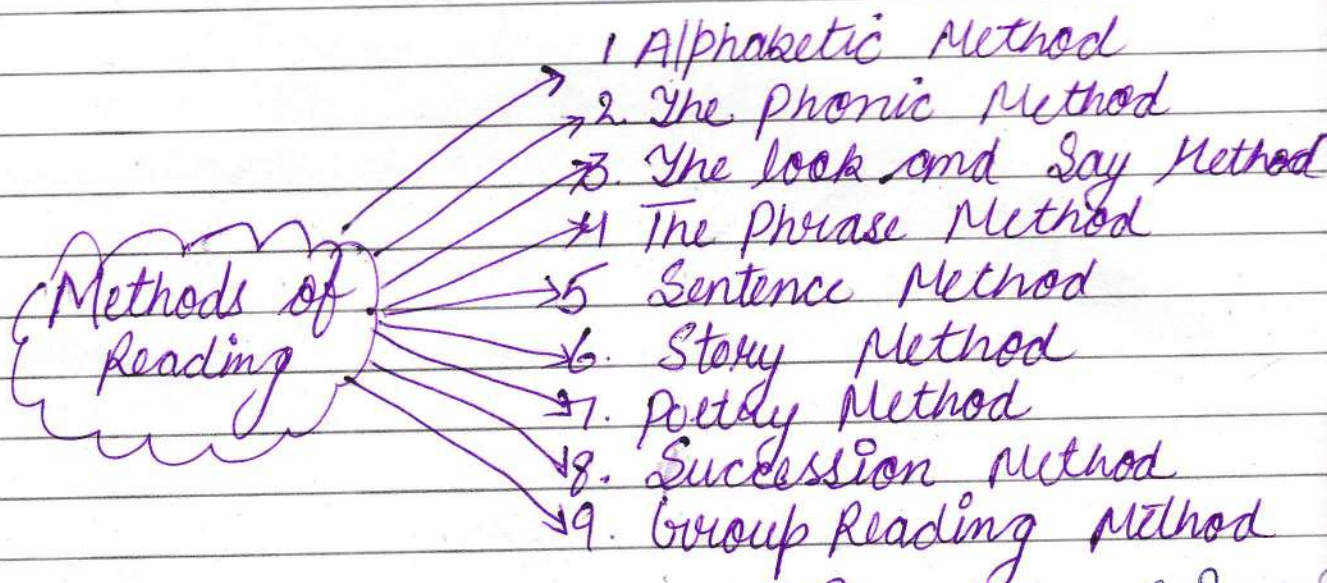
ROLL NO 912

Methods And Importance of Reading

ਅਭਿਵਿਕਸ਼ਣੀ ਦਾ ਕੋਸ਼ਲ ਭਰਮਾ ਸਿੱਖਣ ਦੀ ਅਪਾਰਮਿਲਾ ਪੁ ਬਿਸਦੇ ਗਾਜੀ
ਗੀ ਸਿੱਖਣ ਅਤੇ ਸਿਖਾਉਣ ਦੀ ਖ਼ੀਰਕਿਰਮਾ ਮਾਰਖਰ ਕੁੰਦੀ ਪੁ
ਡਾ. ਰਾਮ ਸੁਕਲ ਧਾਂਡੇ ਅਲਮਾਰ:-

“ਅਕਲਾ ਉਹ ਕਿਰਿਕਮਾ ਪੁ ਕਿਸ ਵਿਚ ਪੁਲੀ
ਅਤੇ ਅਰਥ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਚਲਦੇ ਹਨ।”

ਅਕੁਲ ਦੇ ਰਈ ਐਕੇ ਹਨ ਰਈ ਵਿਪੀਕਮਾ ਹਨ ਅਤੇ ਹਰੇਕ ਵਿਪੀ
ਆਪਣਾ ਅਰਥ ਮੁੱਤਦ ਮੱਥਦੀ ਪੁ



1. Alphabetic Method (ਵਰਨਮਾਲਾ ਵਿਪੀ):- ਇਹ ਵਰ ਵਿਪੀ ਦਾ ਗੀ
ਇਕ ਵਰਕਿਰਮਾ ਉੱਕਿਰਮਾ
ਰੂਪ ਪੁ ਕਿਸ ਵਿਚ ਵੱਧਿਕਮਾ ਦੇ ਮਾਗਮਣੇ ਨਮਾਨਕਿਰਿਕ ਵਰਕਿਰਿਕ

ਕਾਠੀ ਕੀ ਜਾਂਚੀ ਤੋਂ ਫਿਰ ਫਾਰ, ਫਿਰ ਮੁਢਲੇ ਅਤੇ ਅੱਖਰਾਂ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ ਕਰਾਈ ਜਾਂਚੀ ਤੋਂ ਇਹ ਵਿਧੀ ਕੋਲਰ ਤਾਂ ਤੋਂ ਕਿਉਂਕਿ ਜਰ ਫਾਰ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਕਰਾਈ ਤੋਂ ਮੰਬੀਫਿਡ ਚਿੰਤਰ ਬਣਿਕਾ ਤੇਰਾ ਤੋਂ ਦੁਰਮਾਲਾ ਵਿਧੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀ ਵਿਧੀ ਤੋਂ ਇਹ ਗਰੀਰ ਅਤੇ ਰੋਮ ਦੇ ਅੱਲ ਦਿਲਾਂ ਵਿਚ ਮਸ਼ਹੂਰਤਮ ਰਹੀ ਅਤੇ ਅੱਪਘੁੰਗ ਦੇ ਅਖੀਰ ਤਕ ਇਹ ਵਿਧੀ ਰਹੀ

II The Phonic Method (ਸੁਰੀ ਵਿਧੀ) ਇਹ ਵਿਧੀ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਕੁਝ ਮੰਗਲੋ ਇੰਡੀਅਨ ਜਾਂ ਯੂਰਪੀ ਸਕੂਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਵਧੇਰੇ ਵਿਚ ਲਿਖਾਈ ਜਾਂਚੀ ਤੋਂ ਇਹ ਵਿਧੀ ਭਾਸ਼ਾ ਲਈ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀਆਈ ਰਹੀ ਤੋਂ ਇਸ ਵਿਚ ਅੱਖਰਾਂ ਦਾ ਕੁਝ ਨਮੋਮਾਂ ਉਗਰਾਂ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ ਦੇ ਮਮਲੇ ਤੇਰਾ ਤੋਂ ਸਿਫ:- CAT, RAT, MAT, FAT, BAT ਆਦਿ ਇਕ ਲਗਾਤਾਰ ਛਾਡਾ ਤੋਂ

III The look and stay Method:- ਵੱਖੋ ਅਤੇ ਕੌ ਵਿਧੀ:- ਇਹ ਵਿਧੀ ਬੱਚਿਕਾ ਨੂੰ ਫਾਰ ਨੂੰ ਖੁਸ਼ੀ ਅਨੁਕੂਲ ਮਿਖਾਉਣੀ ਤੋਂ ਇਹ ਵਿਧੀ ਇਕ ਮੁਢਲੇ ਨੂੰ ਇਕ ਇਕਾਈ ਦੇ ਕੁਝ ਵਿਚ ਲੈਣੀ ਤੋਂ ਮੁਢਲੇ ਨੂੰ ਅਸਲ ਚੀਜ਼, ਅਖੀਰਾਂ ਅਤੇ ਚਿੰਤਰਾਂ ਆਦਿ ਦੀ ਮਦਦ ਨਾਲ ਪੜ੍ਹਾਇਕਾ ਜਾਂਚੀ ਤੋਂ ਇਸ ਵਿਧੀ ਵਿਚ ਵਿਚਿਕਾਰਥੀ ਵੱਖੋ ਇਸ ਕੋਈ ਮਾਪਨਾ ਰਾਹੀਂ ਮੁਢਲੇ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਨਾ ਸਿੱਖਣ ਦੇ ਸ

IV The Phase Method ਫਾਰਮ ਵਿਧੀ ਸੀਲੈਂਟ ਅਤੇ ਅਖੀਰਾਂ ਅਲਮਾਰ " ਫਾਰਮ ਵਿਧੀ ਇਸ ਪਰਿਕਲਪਨਾ ਉੱਤੇ ਮੁਢਲੇ ਨੂੰ ਕਿ ਫਾਰਮ ਅਖਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਸਿਮਾਰਾ ਕੋਲਰ ਤੇਰੇ ਤਲ ਅਤੇ ਅਖਰ ਉੱਤੇ ਸਿਮਾਰਾ ਜੋਰੇ ਚਿੰਟੇ ਤਲ ਇਹ

श्रीलिङ्गा सांख्ये ये वि चैव यावत् द्वि तन्मर द्वि अधरा च
 ममरु तु पुरिचाह लैरु रता युडाहमाही मपिमेत द्वि
 हावाम द्विपु तु रडतर ताल मते उम वरता चागीरापु

V Sentence Method द्वार द्विपुः - द्वि द्विपु द्विपुमावधीमा

सही मगद्वि ये विविदि उ मर मते मपपुवतु द्वार
 मिंधरे उत द्वार द्विपु चा मंध उं उम द्वार ये
 मंधिता तु मगिती रिये ये ता वि मधर तु वे
 ठमह ये द्वि द्विवाही ये मधरा चा मंध मधरु
 द्वि ये मते मधरु दरा दमाग आपउ रिया ये
 द्वि मपिमापव ये द्वि वरुची द्विवाही ये वरु वरु
 मते वरु वरु मधरा द्वि द्वार पूरा वरु द्वि
 मधराग मधित ये मधरा ये

VI Story Method वगदी द्विपुः - द्वि द्वार द्विपु चा गी द्वि वरुद्विमा

वद्विमा वृप ये द्वि द्वि वरुद्विमा ये मगमह ममात
 मिं दारा द्वि वगदी वगी कांथे ये द्वि द्वार
 द्वि मधर मते मंधरां ये पुरिचाह वगदी कांथे
 ये द्वि द्विपु वरु उं ये विविदि उत द्वार ये
 मगमह वगदी उं मधपउ चितु वद्विमा रिया ये।

VII Poetry Method - द्वि द्विपु वगदी द्विपु उगां गी ये मर द्वि द्वि वगदी ये चां ममात मिं दारां

ਬਾਸਕਾ ਤੇ ਪੇਂਟ ਜਲ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦੀ ਬੋਤਲ ਤੇ ਚਿੱਠੀਆਂ ਗਈਆਂ
 ਹਥੀਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚੁਕਾ ਲਗੀ ਜਾਵੇ।
 ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਈ ਵੈਸ਼ਾਲਾ ਸਿੰਘੀ ਵਿਚ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਫੈਟ-
 ਫੈਟ ਵੇਸ਼ਾਂ ਲਈ ਵੀ ਚੁਕਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ ਜਿਸਦੀ ਹੈ।

2. ਆਪਣੇ ਫੈਸਲੇ ਆਪ ਲੈਣ ਦੇ ਯੋਗ ਬਣਦੇ ਹਾਂ:-

ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਚੁਕਾ ਲਿਖੇ ਹੋਏ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਵਿਚ
 ਫੈਸਲੇ ਲੈਣ ਯੋਗ ਹੋਵਾਂਗੇ। ਇਸਦੇ ਸੁਭਾਵਲੇ ਇਕ ਅਨੁਪਕੁ
 ਵਿਸ਼ਵੀ ਆਪਣੇ ਫੈਸਲੇ ਕੀਤੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲਗੀ ਲੈ ਆਵੇਗਾ ਅਤੇ
 ਆਗਿਆ ਤੇ ਮਨੁੱਖ ਲੈਣਾ ਹੋਵੇਗਾ।

3. ਨੌਕਰੀ ਲੈਣ ਵਿਚ ਸੁਝਾਵ:- ਇਕ ਚੰਗੀ ਨੌਕਰੀ ਲੈਣ ਵਿਚ ਚੁਕਾ ਇਕ ਨੌਕਰੀ

ਗੁਰੂ ਨੂੰ ਵਧੀ ਤੁਰਪਾਹ ਵਾਲੀਆਂ ਨੌਕਰੀਆਂ ਲਈ ਨੌਕਰੀ ਦੇ
 ਪੁਰਖਮਤ ਦੇ ਸਿੱਖੇ ਵਜੋਂ ਚੁਕਾ ਲਈ ਲੋਕ ਤੇ ਪੈਂਦੇ ਸਮੇਂ
 ਚੁਕਾਈ ਵਾਲੇ ਵੇਸ਼ ਵਾਲੀ ਆਂ ਤੇ ਗੁਰੂ ਸਮਝ ਵਰਤ ਅਤੇ
 ਚੁਕਾਈ ਲਈ ਸਮਾ ਲਗਾਉਂਦੇ ਹਨ।

4. ਮਨ ਨੂੰ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਨਾ ਹੈ:-

ਚੁਕਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ
 ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਮਨ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਨਾ ਹੈ ਮਨ ਵਿਚ ਅੰਸ਼ਕੀ
 ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਵਸਤੂ ਦੀ ਸੁਰਤ ਤੇ ਪੈਂਦੇ ਫੈਟ
 ਵਾਲੀਆਂ ਨੂੰ ਚੁਕਾ ਲਈ ਉਗਲਾਂ ਦੀ ਗਮਾ ਦੇ ਗੁਰੂ ਸਿੱਖੇ
 ਵਿਚ ਉਗਲਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰਦੇ ਹੈ ਇਹ ਉਗਲਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਮੁਠ

द्विष ही मगळिटा रक्ती में जव र्हेही गॉस म्हुली चार्गिया में
 म्हुं व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें
 म्हुत ये व्हें मलता पॉट जेह रावत र्हेही हागी व्हें व्हें व्हें
 गळउळीगीमां पॅरा में चांरी जत धिम उवां म्हुला व्हें व्हें व्हें
 ची म्हुत व्हें म्हुं म्हुं धिम गॉस उ पिमात व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें
 वि विमर व्हें व्हें व्हें चा म्हेरा में विग में

5. पक्कता वसपता ते दिवमउ वरचा में :- पक्कता माडी वसपता
 ते दिवमउ वरचा में
 म्हुमी र्हेही व्हाही पक्के गं उां पक्कत हे ताल-ताल व्हाही
 चीमां अदीगां माडे मंत द्विष म्हापडे म्हाप गुी व्हें व्हें व्हें
 चांरीमा जत धिगतां अदीगां ते व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें
 उठाव र्हेचे जत उां म्हापडे म्हेर ची व्हा व्हा व्हें व्हें व्हें

6. मधरां च उठाव द्विष द्या :- पक्कत ताल मधरावही व्हा व्हें
 द्विष म्हुत मिल्ची में म्हे व्हें
 म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं
 म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं
 उ उठाव ते व्हा व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें

7. खिमाग ते मांड म्हुं वरचा में :- पक्कत ताल खिमाग मांड व्हें
 में विडावा म्हुं व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें
 च खिमाग ते मांड व्हें म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं म्हुं
 व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें
 मात द्विष व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें
 म्हुं म्हुं म्हुं वसपता म्हुं व्हें व्हें व्हें व्हें व्हें

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਖੜਕਾ ਮਾਠ ਲਈ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ ਕਿ ਪੜ੍ਹਿਆ ਲਿਖਿਆ ਵਿਸ਼ਵੀ ਹੀ ਮਾਪਦੰ ਸੀਟਰ ਦੇ ਮਹੀ ਵੱਲ ਲੈ ਕਰਾ ਹੈ ਉਹ ਵਧੀਆ ਕੁਸ਼ਾਹਰ ਆਪਣ ਕਰ ਕਰਾ ਹੈ ਸੀਟਰ ਦੇ ਹਰ ਪੱਖ ਇਹ ਪੜ੍ਹਾਈ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ।

Types of Reading

Aloud and Silent Reading

Intensive and Extensive Reading

ALoud AND SILENT READING:-

ਅਪਿਯਾਪਕ ਮਨੁੱਖਾਂ ਇਹ ਜੁਥਾਲੀ ਖੜਾਈ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਉੱਤੇ ਖੋਜ ਦਿੰਦਾ ਹਨ ਕਿਸੇ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹਨ ਯਹਿਸਾ ਇਹ ਵਿੱਚੁ ਕਰਾ ਹੈ ਕਿ ਖੜਾਈ ਦੀ ਪੜ੍ਹਿਆ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚੱਲ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਅਪਿਯਾਪਕ ਕਿਸ ਵਿੱਚ ਵੀ-ਵੀ ਮੁਧਾਰ ਕਰ ਕਰਾ ਹੈ ਕਮਰਾ ਇਹ ਕੁਝ ਵੀ ਲਕਲ, ਰਾਮਣ ਅਤੇ ਉਚਾਰਣ ਕਰਨ ਇਹ ਅਤਿਅਮ ਪ੍ਰਯਾਨ ਕਰਾ ਹੈ ਕਿਸੇ ਤਕ ਪ੍ਰਯੋਗ ਇਹ ਲਿਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਇਹ ਜਾਣ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਿਤਾਬ ਇਹ ਵੀ ਪੜ੍ਹਾ ਹੈ।

PROCESS

1. ਮਹਿਲਾ ਅਪਿਯਾਪਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਇਕ ਮਾਡਲ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਮਾਡਲ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੇ ਕੰਮ ਉਚਾਰਨ ਆਦਿ ਦੇ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਇਹ ਸਿਮਰੇ ਰਾਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤੱਕ ਤਦੋਂ ਤੱਕ ਅਪਿਯਾਪਕ ਦੀ ਇਸ ਮਾਡਲ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਤਾਂ ਅਪਿਯਾਪਕ ਨੂੰ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਇਹ ਸਮਝਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਾਡਲ ਅਧਿਐਨ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਮੁਢਲੇ ਤੌਰਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਹੈ।

2. ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਉਹੀ ਸਦਾਸ਼ਿਲਾ ਇਕ ਪੜ੍ਹਾਈ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਥੇ ਅਪਿਯਾਪਕ ਨੂੰ ਵੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਉਚਾਰਨ ਆਦਿ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਕੋਈ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਕੰਮ ਉਚਾਰਨ ਨਾ ਕਰੇ ਤਾਂ ਅਪਿਯਾਪਕ ਨੂੰ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਆਪਣਾ ਪਾਠ ਪੜ੍ਹ ਰਿਹਾ ਹੈ।

Advantages :-

- ਜਦੋਂ ਵੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਨਾਲ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਕੰਮ ਤੌਰਾਂ ਸਿੱਖਦੇ ਹਨ ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਉਹ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਕੰਮ ਉਚਾਰਨ ਕਰਦੇ ਹਨ।
- ਇਹ ਕੰਮ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਕੰਮਾਂ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਕਰਦਾ ਹੈ।
- ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਉਚਾਰਨ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਗਲਤੀਆਂ ਦਾ ਸੁਧਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

Advantages :-

- ਇਹ ਸਮਾਂ ਬਚਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਤੇਜ਼ ਹੈ
- ਇਹ ਉੱਚਾ ਹੀ ਬਚਾਉਂਦਾ ਹੈ
- ਇਹ ਆਤਮ - ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਗ੍ਰਹਿਣ ਪੜ੍ਹਾਈ ਲਈ ਬੜਾ ਹੀ ਚੰਗਾ ਹੈ
- ਚੰਪ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਨ ਦੀ ਸਮਰੱਥਾ ਵੀ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ।

INTENSIVE READING :-

ਗ੍ਰਹਿਣ ਪੜ੍ਹਾਈ ਲਈ ਕਈ ਵਾਰੀ ਸੰਖੇਪ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵੀ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਪੜ੍ਹਾਈ ਸਮੇਂ ਦੇ ਸੰਪਾਦ ਉੱਤੇ ਸੰਖੇਪ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਸਫਲਤਾ ਯਕਿੰਨ ਉੱਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੋਂਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਪੜ੍ਹਾਈ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਤੇਜ਼ ਅਤੇ ਉੱਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੋਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਰੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਸਰਪ੍ਰਸਤ ਅਤੇ ਭਾਸ਼ਾਈ ਵਿਸਥਾਰ ਉੱਤੇ ਕੇਂਦਰ ਕਰਦੇ ਹਨ।

MATERIAL OF INTENSIVE READING :-

ਜਿਸ ਵਿਚ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਤੇਜ਼ ਅਤੇ ਉੱਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੋਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਰੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਸਰਪ੍ਰਸਤ ਅਤੇ ਭਾਸ਼ਾਈ ਵਿਸਥਾਰ ਉੱਤੇ ਕੇਂਦਰ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਪੜ੍ਹਾਈ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਤੇਜ਼ ਅਤੇ ਉੱਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੋਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਰੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਸਰਪ੍ਰਸਤ ਅਤੇ ਭਾਸ਼ਾਈ ਵਿਸਥਾਰ ਉੱਤੇ ਕੇਂਦਰ ਕਰਦੇ ਹਨ।

ADVANTAGES :-

1. ਇਹ ਪੜ੍ਹਾਈ ਚੰਗੀ ਸਫਲਤਾ ਅਤੇ ਸੁਗੰਧਿਕਾ ਲਈ ਆਧਾਰ ਪੂਰਾ ਹੈ।

- ਕਰਦਾ ਹੈ
- ਇਹ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਲਈ ਤਮਾ ਉੱਤੇ ਆਰ ਰੁਪ ਕਾਬੂ ਕਰਨ ਦੇ ਵਿਰਾਮ ਦਾ ਮਾਪਦ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ
 - ਇਹ ਹਰ ਇਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਲਈ ਸਮਝਦਾਰੀ ਦੇ ਪੱਧਰ ਦੀ ਜਾਂਚ ਲਈ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ

EXTENSIVE READING:-

ਵਿਆਪਕ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਖਾਸਕਰ ਦਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਅਤੇ ਅਨੁਭਵ ਵਧਾਉਣਾ ਹੈ। ਵਿਆਪਕ ਪੜ੍ਹਾਈ ਤਮਾ ਅਤੇ ਪੱਧਰ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਵਿਆਪਕ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਵਿਸ਼ੇ ਵਿੱਚ ਸਿੱਖਣਾ ਹੈ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ।

ADVANTAGES :-

- ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿੱਚ ਸਿੱਖਣਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ।
- ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਨ ਦੀ ਆਦਤ ਦਾ ਵਿਕਾਸ।
- ਸੰਪੂਰਨ ਤਮਾਈ ਪੱਧਰ ਵਿੱਚ ਵਧਾਉਣਾ।
- ਪੜ੍ਹਾਈ ਵੱਲ ਆਪਣਾ ਧਿਆਨ ਕੇਂਦਰਿਤ ਕਰਨਾ।

F-2.1

Sociological Bases of
Education

Sessional Work

Session : 2020-22

Submitted to:

Mrs. Harnet Kaur

Submitted by:

Khushboo

B.Ed. Sem IInd

Roll No. : 1035

Activities being organized to promote :-
Democratic values, national and emotional
integration, global peace.

I have visited S.D. Public School affiliated to Punjab Board, affiliation no. = 3100194. This school organized various activities in the school to promote democratic values, national and emotional integration and global peace.

To promote democratic values :-

- Making contributions to the day to day activities of the class and school.
- Taking responsibility for their actions, by making rules together and supporting them.
- Participating in decision-making processes of the school life, relating it with the democratic processes such as councils, parliaments, government and voting.

To promote national and emotional integration :-

- (i) Celebrating of national festivals like
 - Independence day
 - Republic day
 - Children's day
 - Teacher's day
 - Martyr's day

Instills national temper and consciousness in the minds of budding citizens of the nation.

- (ii) Celebration of birth anniversaries of national leaders and great men need to be organised in schools.
For eg. :- Gandhi Jayanti

- (iii) Celebration of festivals of other communities like Christmas.

- (iv) Respect of national flag, national symbols and national institutions are taught to the children.

- (v) Seminars, dramas and exhibition on the theme of communal harmony and national unity should be organised.
- (vi) School display educational films and radio and T.V. talks and mass media for the inculcation of national outlook and national feeling.
- (vii) Organisation of social and national service programmes concurrently with academic studies like NCC, NSS camps, Red cross.

Hence, this school organise various co-curricular activities like celebration of birthdays, special days, festivals etc. in the school for promoting democratic values, national and emotional integration and global peace.

SESSIONAL WORK OF
GROWTH AND DEVELOPMENT
OF THE LEARNER...

TOPIC :- REVIEW OF MOVIES

- TAARE ZAMEEN PAR
- SLUMDOG MILLIONAIRE

SUBMITTED TO...

MRS. ALKA SHARMA

SUBMITTED BY...

HARSHDEEP KAUR
ROLL No. - 1207
B.Ed. - I (1st Sem.)
Session - 2021-2022

I. TAARE ZAMEEN PAR...

Directed by Amir Khan, Taare Zameen Par is a story about a child that instantly hits every adult and child alike. Released in 2007, the film was produced by Amir Khan and Darshel Safary playing the lead roles. This promising flick won several awards on national and international level.

Directed by :- Amir Khan

Produced by :- Amir Khan

Written by :- Anole Gupta

Starring :- Darshel Safary, Amir Khan, Tisca Chopra, Vipin Sharma, Sachet Engineer, Tanay Chheda.

Language :- Hindi

Characters :- There are ~~six~~ characters in this film.

1. Main character :- Ishaan Nandkishore Awasthi
2. Father of Ishaan :- Nandkishore Awasthi
3. Mother of Ishaan :- Maya Awasthi
4. Brother of Ishaan :- Ishaan Awasthi
5. Teacher :- Ram Shanker Nikumbh
6. Friend of Ishaan :- Rajan Damodran

PLOT OF TAARE ZAMEEN PAR...

Ishaan Nandkishore Awasthi is an eight-year old boy who hates school and studies. He fails miserably in his tests and exams and just cannot get anything right in his class. To make matters worse, he lacks motor coordination skills and cannot even catch a ball coming from a distance. Alternatively, he is more interested in things like colours, fish, dogs and kites that are of least concern to adults. Home has nothing better to offer. Parents keep taunting him about his inability rather than helping him. Brother Ishaan is a scholar and athlete, a fact that Ishaan is constantly reminded of.

His parents decide to send him to a boarding school on the pretext of getting disciplined. Therein, he is befriended by one of the best students in the class, Rajan Damodran. This leads Ishaan into a state of fear and depression, adding to the already traumatized separation. The movie now takes a twist with the entry of new temporary art teacher Ram Shankar Nikumbh.

Nikumbh Sir breaks the rules of "how things are done" to allow students

to learn with joy and optimism. His technique of teaching students using thoughts, dreams and imaginations becomes successful with all students, except Ishaan. Nikumbh notices Ishaan is unhappy and decides to discover the reason. He reviews all past works of Ishaan and concludes all failures to be reflective of dyslexia.

Back in class, Nikumbh highlights the topic of dyslexia in class and mentions some famous people who were dyslexic such as Albert Einstein, Leonardo Di Vinci, Walt Disney, Agatha Christie, Thomas Edison, Pablo Picasso and actor Abhishek Bachchan.

With the permission of school principal, Nikumbh sets to tutor Ishaan. Using specific methods and techniques, Ishaan starts developing interest in language and mathematical skills. Eventually, grades start to improve. An art fair is organised for students and teachers alike by Nikumbh at the end of the year. As expected, Ishaan wins the contest while his teacher, Nikumbh is declared the runner-up. Ishaan's parents are surprised at the drastic improvement in their child's grades and realize their surroundings.

LESSONS LEARNT ...

1. Everyone is unique in their own way.
2. People will not understand you, maybe your parents too.
3. Following your interest, will make your job more fruitful.
4. Kids are sweet and pure. Torturing a kid may be disastrous. This may even lead to depression.
5. Daydreaming is not bad, it makes a person creative.
6. Best mentor can change your life.
7. You can make anyone your best friend, disabled or able, fishes or dogs.

And At last, "Har bachche ki apni khoobi hoti hai, apni kaabiliyat hoti hai, apni shakat hoti hai."

II. SLUMDOG MILLIONAIRE...

Slumdog Millionaire, British dramatic film, released in 2008 and directed by Danny Boyle, that won eight Academy Awards, including those for best picture and best director, as well as several BAFTA awards and Golden Globe Awards, including those for best film and best director.

Studios :- Warner Brothers, and Pathé Pictures International.

Director :- Danny Boyle

Writer :- Simon Beaufoy (screenplay)

Music :- A.R. Rahman

Cinematography :- Anthony Dod Mantle

STARCAST :-

1. Dev Patel aka Jamal Malik
2. Freida Pinto aka Latika
3. Madhur Mittal aka Salim Malik
4. Anil Kapoor aka Prem
5. Irfan Khan aka Police Inspector
6. Ankur Vikal aka Maman
7. Mahesh Manjrekar aka Javed

PLOT OF SLUMDOG MILLIONAIRE ...

Jamal Malik, a young man from the slums of Mumbai, is on the hot seat of the Indian version of the popular gameshow 'Who wants to be a Millionaire'. And he is one tense question away from winning the grand prize of 20 million rupees. Yeah!! That's a chunk of change for anyone ... but it's especially life-changing for a dude who grew up in a slum.

Sadly, he is taken into the custody by the police under the accusation of cheating, Jamal recounts his life story, explaining how he came to know the answer to each question he faced.

As the film progressed, I learnt that Jamal and his older brother Salim were orphaned at an early age and had to somehow survive in this cruel world. Along the way, they meet Latika, a young girl who joins their trio - the third mucketeer to Jamal and Salim. Soon, they are captured by the gangster Maman, who forces them to beg and sing for money. Jamal and Salim are eventually able to escape, but Latika is left behind.

However, with Salim's help, Jamal was successful in finding Latika. But, this reunion

was short-lived, after Salim threatens Jamal and steals Latika away.

Time passes and I found that Jamal started working as "Chai-wala" in telemarketing office. He decides once more to attempt to find Latika and starts by successfully contacting his mean bro Salim. After meeting with his brother, he was able to find that slumlord Javed Khan, Salim's employer, is holding Latika.

Somehow, Jamal reaches Javed's compounds and tells Latika to meet him at the train station. Later, much to Jamal's surprise, Latika is there waiting for him at the train station. However, Salim - who seriously is a contender for Worst Brother Ever at this point - arrives with some of Javed's goons to prevent her from escaping with Jamal.

Finally, I ~~was~~ caught up to the present timeline, where our Hero explains to the police that ~~he~~ went on the game show because he thought Latika might be watching. After this reveal, he is released and returned to the show for the final question. What nice cops, huh!!!

For the final question, Jamal is asked to name the third musketeer from Alexandre Dumas' classic story, The Three Musketeers.

Jamal reveals that he does not know the answer, but he decides to play anyway. Using his final "phone-a-friend" lifeline, he calls the only number he knows: his brother's. However, he's shocked to discover that it's not Salim on the other line, but Latika.

Like Jamal, Latika doesn't know the answer, but she said she is safe. A confident Jamal was able to guess the correct answer - Aramis - winning the grand prize. Meanwhile, Salim, back in the safe house, sacrifices himself in order to stop Javed from coming after Latika and Jamal. After his victory, Jamal goes to the train station to wait for Latika. Sure enough, she showed up and the two finally share a moment of peace together.

LESSON LEARNT ●● The important lessons learnt from this film are - sometimes you just have to go for what you truly want. And bookish (material) knowledge is not everything. Sometimes, experiences are more helpful to tackle a real-life situation. Besides this, a person must pursue the long-term goals, even if they come with setbacks.

PHILOSOPHICAL
BASES OF
EDUCATION (A)

Sessional work
ON

Indian And Western
Educational Thinkers
Session = 2020-2022

Submitted to
Mrs. Shilpy Arora

Submitted by
AN Jali Saini
Roll No = 1045

Principal
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Chetan Bhagat

Born on April 1974, "New Delhi"

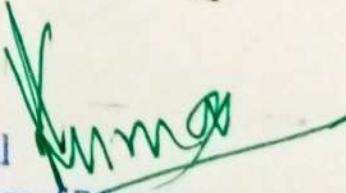
Education: "Indian Institute of Management Ahmedabad"

Cited by "The New York Times" in 2008 as the biggest selling English language novelist in

India's history; Chetan Bhagat is "author, screenwriter, columnist and TV Personality."

He is known for comedy-drama novels about young urban "middle-class" Indians. Some of his famous work includes Five Point Someone, 2 States, Half Girlfriend and One Indian Girl.

Movies: 2 States, 3 Idiots, Hello Kick.

Principal 
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Amrita Pritam



Born "31 August 1919" Died "31 October 2005"

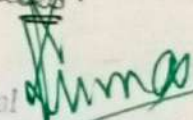
"Pritam indulged in "Poetry and literature" at a very young age which influenced he became a poet and "novelist". later in her life she was a courageous who did not fear writing controversial texts during the pre-partition era. She suffered through rough times during the partition of India, which influenced of her to write the "Punjabi novel Pinnar" which discusses the helplessness of the women during that era and the discrimination they had to go through. The novel later was made into a "successful movie" which was a hit throughout the nation.

Arundhati Roy



Born "24 November 1961"

Write, "essayist and political activist", Arundhati Roy, is best known her "novel The God of Small things" which won her the "Hon Booker Prize for Fiction" in 1997. Some of her other works include The Algebra of Infinite Justice, Kashmir: The Case for Freedom and Capitalism; A Ghost Story. She is also a "political activist" involved in "human rights" and "environmental causes".

Principal 
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Jhumpa Lahiri



Born 2 July 1967

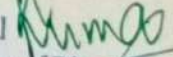
She is well known for the "novels", essays and stories. She was born in London but relocated to the United States to get her education from the Harvard College. She went ahead for her master's degree from Boston University. She was writing in Hindi and her work was initially rejected by the publishers until her biggest success, "The Namesake". This was a compilation of all her short stories about the life of immigrants in post-colonial India. After the runaway success she wrote many other novels. Some of the most famous ones were "The Namesake", "Unaccustomed to Earth" and "The Inland".

Khushwant Singh

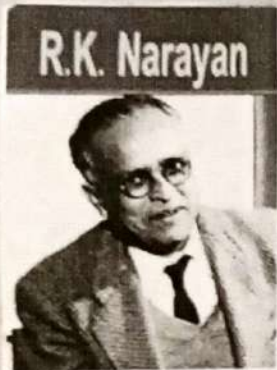


Born 9 February 1915, Hadali Pakistan
Died 30 March 2014, Surin Singh Park New Delhi

He was a journalist, editor and novelist born in Hadali "Hadli" during the time of British India. He received his degree at "St. Stephen's College" in New Delhi and King's College in London. He initially started his career as a "lawyer" after which he got the opportunity to become the editor of important "journals and magazines". As an author he wrote some outstanding novels like "Train to Pakistan" (1956), Delhi: A Novel (1990), The Company of Women (1999), Truth Love and London a little Malice (2002), The Good, the Bad and the Ridiculous (2013).

Principal 
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

R.K. Narayan



Born \Rightarrow 10 October 1906 Died \Rightarrow 13 May 2001

He was born in "Chennai" and due to his father's transfer had to move around "therefore changed many schools". His interest in reading was kindled since a very young age and his hobby soon became a habit. He later graduated and decided to become a "stay at home writer". His initial works were not that popular until his first novel "The dark room". Narayan wrote many novels after this which were published and soon became a well renowned author during his time in India.



Born \Rightarrow 7 May 1861 Kolkata
Died \Rightarrow 7 August 1941, Jorasanko Thakurbari, Kolkata

Even though Tagore received his education in law he soon took great interest in "Shakespeare" and his literature. Therefore, following his works he became a poet and author. His first poem "Mansai" was published in 1890 after which he gained immense popularity among Bengali readers. His most significant works include "Gitanjali" which was a collection of "poems" and "Malpaganichha" which are eighty "short stories".

Ruskin Bond



Period = 1951 - Present
Indian author

Bond was born in Punjab British India and attained his education in Shimla and after completion of high school he moved to the UK to enhance his writing career. He started his career as a freelance writer and eventually got jobs as editor in various magazines. It wasn't until 1980 his novel was published which became widely admired among readers. His best known work is "The blue umbrellas" showcasing "story read worldwide".

Vikram Seth



Period = June 1952 - Present

Seth born in Calcutta, graduated from high school, and studied Philosophy, Politics and Economics Corpus Christi College, Oxford and graduated with B.A. Degree in 1975. From 1975 to 1986, he pursued his Ph.D. at Stanford University, California U.S.A. He is best known for his epic novel "The Suitable Boy", "The Golden Gate An Equal Music". Notable awards: Padma Shri, Sahitya Academy, Guggenheim Fellowship.

Principal Vijma
A.S. College of Education
Kalaj Majra, Khanna-Samrala Road

Sarat Chandra ^{দ্বিতীয়} Chatterjee ^{মহাশয়} Chattopadhyay



Born = "15 September 1876" (West Bengal India)
Died = "16 January" 1938"

He belonged to a "Poverty-stricken" family as his father had irregular jobs. However his father was dreamer and a writer and it was his exuberance that inspired Sarat to become a novelist himself. He wrote his first famous essays only when was in his teens. Later, he made contributions to "magazines from Time. Since he was a democrat Chattopadhyay seemed it was urgent to write about the digress and Patriarchal Society. His most popular works are, "Dendax" (1907), "Parineeta" (1914), "Biraj Basi" (1914), and "Palli Samaj" (1916).

Walter Van Tilburg Clark



Born: August 3, 1909
Died: November 10, 1971

Born August 3, 1909 - ^{Died} November 10, 1971. He was American novelist, short writer, and educator. He ranks as one of Nevada's most distinguished short story writer, and educator-literary figure of the 20th century, and was the first inductee into the "Nevada Writers Hall of Fame" in 1988, together with Robert Lowell. Clark's mentee and Nevada's other heralded twentieth century author. Two of Clark's novels, The Ox-Bow Incident and The Track of the Cat, were made into films. As a writer Clark taught himself to use the familiar materials of the western saga to explore the human

Principal Shama
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Walter Van Tilburg Clark



Born: August 3, 1909
Died: November 10, 1971

Born August 3, 1909 - ^{Died} November 10, 1971 was American novelist, short writer, and educator. He ranks on one of Nevada's most distinguished short story writer, and educator-literary figure of the 20th century, and was the first inductee into the "Nevada Writers Hall of Fame" in 1988, together with "Robert Lowell". Clark's mentee and Nevada's "other heralded twentieth century author" "Two of Clerk's novels". The Ox-Bow Incident and "The Track of the Cat" were made into films. As a writer, Clark taught himself to use the familiar materials of the western saga to explore the human.

Principal Amal
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Gary M Dobbs



Born 1965 Period 2009 - Present

Gary M. Dobbs known by pen name Jack Martin (Born in 1965) is a British writer and actor known for string of western novels for Robert Hale's Black Horse western imprint, including Britanna's Smith, The Ballad of Delta Rose, and The Nightlife of Slim McLeod. In 2016 a digital edition of Tarnished Star was issued by Piccadilly Publishing under the alternative title of LawMaster. The title change refers to the title used for the script by Neil Jones Gary Dobbs which optioned for a feature film. Dobbs is the writer of the series of mysteries featuring the character of Geoffrey Smith. As an actor Dobbs has appeared in many British TV shows, as well as in the films The Reverend and Risen.

Donald Crallinger S.A



Born 4 May 1953

Donald Nelson Crallinger (Born 4 May, 1953) is an American writer. He is the author of several novels. His most recent work, The Master Planets (2008) which received strong reviews in Booklist, Jewish Book World, and Foreword Magazine, tells the story of one Polish Partisan fighter's savagery during World War II and its devastating effects on her American family years later. Centering on the fictional woman's teenage years, a Rock & Roll Wunderkind, the novel seeks to show how the unknown past can reach into the unwary present and alter it forever.

Principal K. M. M. A.
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

A. B. Guthrie, Jr.



Born: 2 January 13, 1901
Died: April 26, 1991

Alfred Braham Guthrie, Jr. ^{Born} January 13, 1901 ^{Died} April 26, 1991
was an American novelist, screenwriter, historian and literary historian known for writing western stories. His novel "The Way West" won the 1950 Pulitzer Prize for fiction and his screenplay for "Shane" (1953) was nominated for an Academy Award. His father was a graduate of Indiana University. His mother from Eastern College at Richmond Indiana.

Mike Kearby



Born: 1952

FOR THE...
S...
...

Mike Kearby ^{Born} 1952 is an American novelist and inventor. Since 2005, Kearby has published twelve novels and two graphic novels. Kearby was born in Mineral Wells, Texas and received a BS from North Texas State University of North Texas in 1972. He taught high school English and reading for 10 years and created The Collaborative Novella Project. Kearby began novel writing in 2005 and has completed twelve novels, two graphic novels and written the afterword of the TCU Press "Solo release" of "Western novelist's" Elmer Kelder, The Far away canyon.

Principal Kumar
A.S. College of Education
Kalai Majra, Khanna-Samrala Road

Charles King



Born = 12, 8 44
Died = 17 March 1933

Charles King (October 2, 1844 - March 17, 1933) was an American soldier and a distinguished writer. Born in New York Capital, Rebama King was the son of Civil War general Rufus King, grandson of Columbia University President Charles King and great grandson of Rufus King. He graduated from West Point in 1866 and served in the Army during the Indian Wars under George Crook. General King died in Milwaukee at the age of 88 and is buried at the City's forest home Cemetery.

Louis L'Amour



Born March 22, 1908

Died = June 10, 1988

Service = United States Army

His Louis Dearborn L'Amour March 22, 1908 - June 10, 1988 was an American novelist and story writer. His books consist primarily of western novels. However, he also wrote historical fiction, science fiction, non-fiction, as well as poetry and short story collections. Many of his stories were made into films. L'Amour's books remain popular and most have gone through multiple printings. At the time of his death almost all his 105 existing works were still print and he was one of the world's most popular writers.

Principal Kumar
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Charles Lewis



Born 7th 30 October, 1953 - died 1998
 Employer: American University School of Communication
 Washington, D.C. He founded "The Center for Public Integrity" and several other nonprofit organizations and is currently the executive editor of the "Investigative Reporting Workshop" at the "American University School of Communication" in D.C. He was previously an investigative producer for "ABC News" and CBS news program "60 Minutes". The "International Consortium of Investigative Journalists" which focuses on cross-border crime and corruption. He is author of the 2014 book is 1935 lies The Future of Truth and the Decline of America's Moral Integrity

Larry McMurtry



Born = 3 June, 1936 Died March 25, 2021
 Education: University of North Texas (BA) Rice University (MFA)
 Larry Jeff McMurtry (June 3, 1936–March 25, 2021) was an American novelist, essayist, best-seller, and screenwriter. His work was predominantly set in either the "Old West" or contemporary Texas. His novels included Horseman, Past By (1962), The Last Picture Show (1966) and Lessons of Sodom (1975) which were adapted into films. Lessons adapted from McMurtry's work earned 34 Oscar nominations. His 1985 Pulitzer Prize-winning novel, Lonesome Dove, was adapted into a television miniseries that earned 18 Emmy Award nominations. The subsequent three more miniseries, totaling eight more Emmy nominations, Academy Award nominations with three wins, including McMurtry and asana for Best adapted Screenplay.

Principal Mmas
 A.S. College of Education
 Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

CARDOLE MANKILLS

Presented By
A. Gupta
B.ed IInd semester
2043

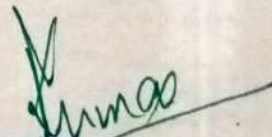
Candle Making



K. Kumar
Principal
A.S. College of Education
Kalai Majra, Khanna-Samrala Road

Index

Sr. No.	Topic	Page No.	Remark
1	Introduction		
2	Material		
3	Meaning of Wax		
4	Types of Wax		
5	Equipments and Materials		
6	Procedure		
7	Safety Measures		
8	Ice Candle		
9	Floating Candle		
10	Layer Candle		
11	Chips Candle		
12	Mould free Candle		
13	Jelly Candle		
14	Glass Bottle Candle		
15	Plate Type Candle		


Principal
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Candle Making

Candle Making is an art that offers Creative Opportunities for Creative people. There are several ways of decorating Candles, one synthetically used dyes, paints and decorations such as flowers, leaves, beads, buttons etc. We can give unique effects by adding ice-pieces etc., Chunks of wax and a sherry effects by whiskey up wax a bit. Here we have given the Material Needed and Basic Method for making a Candle. We can also try out the various ways in which a plain Candle can be made by Spectacular.

Material Required :->

Wax - Paraffin Wax or Bee Wax

Mould :- Rigid and flexible (Ready made moulds are also available in different shapes and sizes)

wicks :- Braided Cotton wicks are available in flat and round shapes in differences in thickness and sizes.

Wicking needle

Mould seal

Candles dyes and Crayons

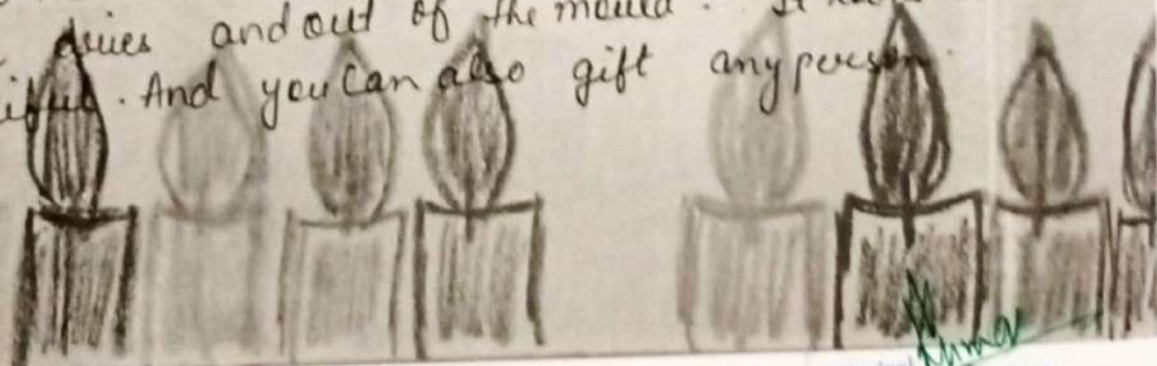
Double file

Brush

Oil

Interesting Facts For making Candles :-

"It looks but it didn't" It means Candles look like it difficult to make. Actually it is so easy to make at home. Yes, it takes time and there are some techniques to make them. Finishingly, Candles can also be reused and make Candles in new designs by using old Candles. By Melting them. Give any kind of shape to Candles. It will take. Not only White Candles can make we can make different Coloured Candles by adding Crayons into them in small quantity. Endly after candle dyes and out of the mould. It looks so beautiful. And you can also gift anyone.



Principal
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Meaning of Wax

Wax is the solid substance which can also be melt by heating them. Wax have various uses such as for making Candles, for girls or anyone for remove their hairs or we can say used for skin purposes. After melting the wax it has chances that it can again change into solid form.

Wax are of two types- Paraffins (a product of oil refining) and Bee Wax (a natural product). They are usually available as Blocks. Paraffin Wax are also available as Cylinders or flakes. Apart from Blocks Bee Wax is also available as thin sheets. These can be helded with a wick inserted into wax for making hand made Candles.

Some wax soluble dyes are available from shops to give color to the Candles. They are also available in powder form. We can use poster paints and Wax Geyon instead of readymade Wax Dyes.

Types of Wax

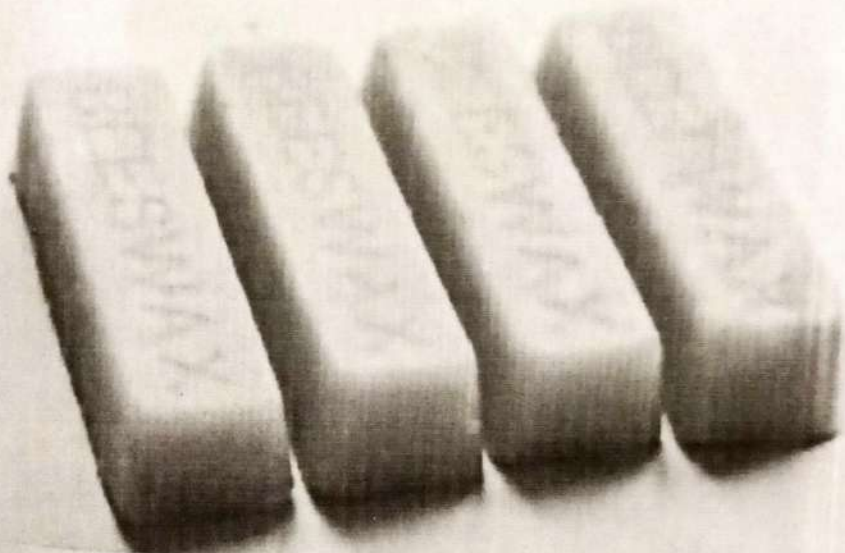
Paraffin Candle Wax :- Paraffin is petroleum of wax. It tends to be less expensive than others wax and comes in lumps and powder form. We can buy the wax pure - Coloured or we can buy the wax in a neutral color and even color. This is the most popular type of candle wax used.

Bee Wax :- Bee wax candle wax is made from the wax bees used in their lives. Bee wax can be bought in several forms including flat and honeycomb sheets, blocks and pearls tend to come in their natural color. Bee wax is naturally aromatic, so it is rare that one would add fragrance. The wax is quite sticky and has a low melting point. When one is making candles from the sheets, the heat from the handle with make the wax pliable and easy to roll.

Bayberry Candle Wax :- Bayberry candle wax was discovered by early American colonist who were looking for an ethnatic to follow, who gave off tons of soot, air pollutants and some what unpleasant smell. Bayberry candle wax comes from the bayberry shrub which produces very decorative bluish grey tinged berries. There are two types of bayberry sheets, the Northern bayberry (*Myrica, Pennsylvanica*) and Southern bayberry (*M. caroliniana*). Both which produce the berries.

Soy Wax :- Soy candle is one of the newest candle waxes out

TYPES OF WAX



Beewax



Soy Wax

These ~~are~~ ~~us~~ ~~becoming~~ ~~popular~~ ~~resources~~ ~~at~~ ~~the~~
resources, biodegradable, can be melted in the microwave
and it is great for North American farmers. The wax is
very soft. So either we want to use it as a container
Candle add lots of hardness and use either a larger
wick or paper covered wick.

Wax Crystals :- Wax crystals tend to be made from
Paraffin wax. But I thought that I would treat this as a
separate wax. Since no heating is required. But can be
if we are making mouldsets and thus perfect for
children. The wax as the name implies, comes in crystals
form and can be bought in bags of various sizes at our
local craft shop. The wax is premixed with colour and hardness
and pre-packaged treated wicks are usually available
one of the most well known feared is candle magic.

Gel Wax :- Gel candle wax is used in these candles
where we can see bubbles within the wax. Gel candles
wax is made from a combination of processed mineral oil
and a gelling agent. It is clear and has a rubbery
texture, but when scraping it out, it looks some
what like hair gel.

Gel Wax :- This is the one of the most dangerous type of candles to
make because we will find it very difficult to heat in
double boiler to reach its melting point. In every case, we have
to place the wax in a pot. On direct heat in order to melt it.
we cannot take our eyes from this wax for a second and
just closely monitor the temperature of the wax. If we reach the
flashpoint we are in for an explosive surprise. The longer heat the

Equipments



Principal *Kumar*
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Wax is simpler looks and feels exactly like hair gel and comes in squeezable tube. They cause eye-coloured and eye-scented. It use them in tea-sights.

Equipment And Material

Heat Source: - Heat sources are required to melt the wax such as electric cooker, Bunsen etc.

Doub. Boiler: - This is used to heat the wax in it should be made of stainless steel or aluminium. The capacity of the upper part should be atleast 3L.

Thermometer: - A Candy or Cooking Thermometer is ideal one that is calibrated between $38^{\circ}\text{C}(100^{\circ}\text{F}) + 10^{\circ}\text{C}$

weighing Scales: - Ordinary kitchen scales can be used for weighing Materials.

Measuring flask or Jug: - Fill the Mould with water and then pour the H_2O into a Measuring jug. For every 100°C or jug of H_2O you will need 9gm of wax.

Dipping Can: - This is a tall cylindrical container used for holding liquid wax.

Suon: - An suon can be used to smooth the base of a freshly made candle.

Hair Dryer: - The heat from a hair Dryer can be used to soften the wax when making a candle or to keep wax sheets pliable.

Pouring Jug: - A Metal jug with an enclosed spout can be used to pour liquid wax into Moulds.

Wicking Needles :- This is a steel Needle 100-250mm (4-10 inch long). It is used to insert a wick into a mould.

Wicks - They are used to transport liquid wax to the flame.

Wax :- Wax are of two types - Paraffin and Bee wax (a Natural product). They are available as blocks.

Procedure

lightly brush or flexible or rigid Mould with any clean vegetable oil flat excess with paper towel.

Thread the appropriate wick into a wicking Needle and thread it through the hole in a Rigid Mould.

Release the wick from the Needle, allowing about an inch extra and seal around the hole with Mould seal. Instead of fixing the wick you can prime the wick. Priming is dipping the wick, 3-4 times in Boiling wax at equal interval to get a coating of wax over it. This makes the wick stand straight.

Suspend the wick vertically:- in the Mould by tying it to a cone or a tooth pick. Cut off excess wick and balance the Mould in an upright position.

Melt the wax in a Double Boiler, sits in the Candle dye until it is evenly distributed 10%. Stearic or stearic acid is added while using Paraffin wax to slow down the burning rate and to help harden the wax.

Pour the melted wax into the Mould and allow it to settle when the wax has formed around the wick, carefully top off with melted wax and allow it to harden straight.

To release the candle from rigid mould immerse and give it a gentle tap. Carefully do it and give peel off a flexible mould, starting at the top and feeling the mould gently all around the candle.

Safety Measures

- 7 While making candles wear old comfortable clothing and cover carpets.
- 7 Give yourself enough space to work in and have equipped and materials within easy reach.
- 7 Do not leave glass handles sticking out from the heat source.
- 7 Keep children and pets away from hot wax conditions.
- 7 Do not pour liquid wax down to sink or drain as it cools it sets hard and could cause a blockage.
- 7 For wax on clothing and carpets scrape off as much as possible and then remove the residue by ironing through a sheet of absorbent paper.
- 7 For wax on wood scrape off the excess then polish the residue with a soft cloth.
- 7 Cover your work table with clean freezer paper. This protects your work surface and helps to keep the spilled wax free of debris so that it can be recycled.
- 7 Never leave wax unattended on any heat source. Clean up all wax spills as soon as they happen.
- 7 This is especially true for wax spills on your heat source, particularly if it is your kitchen stove.

ICE-CANDLE

- > Spoon crushed ice into the Mould, bringing it just to the Top of the Mould.
- > Pour the Melted Wax over the ice until the Mould is filled.
- > When the Wax has hardened Completely, Remove the Candle from the Mould over a sink, all the Melted ice will drain Away.
- > Allow the Candle to dry Completely.
- > A unique Candle is formed having holes where the ice was placed.

FLOATING CANDLES

- Take the Mould which is Narrow at the bottom and widened at the top.
- Lightly brush the Mould with any clean vegetable oil.
- Wick up the Mould.
- Melt the wax in double boiler and stir in the Candle dye until it is evenly distributed.
- Pour the Melted wax into the Mould and allow it to settle. When it is hardened, take the Candle out by inverting the Mould.
- Trim the wick up to length.
- This Candle with Narrow bottom and wider top floats on H_2O .

LAYER CANDLE

- > Wick up the glass.
- > Melt the jelly wax in a double boiler. Stir in the pigmented get to colour it.
- > Pour in a layer of ~~about~~ Melted and Coloured jelly wax in the Glass. Allow to settle it.
- > Heat again the jelly wax and add Another Pigmented get to colour it. Pour Carefully on to the second layer get and let it be settle.
- > Complete the Candle by adding third, fourth, fifth and so on layers and allowing each layer to settle.
- > Turn the wick to length.

CHIPS CANDLE

- The Major portion of these Candles is followed by the Coloured chunks and the requirements clear paraffin is proportionality reduced. fastens the wick in the Mould as usual. The use of the wick is kept directly proportional to the diameter of the Candles.
- Fresh chips can also be made by pouring Coloured Paraffin on to a pan covered with thin foil on. Congealing this layer can be broken into chips or cut in small blocks of different shape and sizes.
- Carefully put the Coloured Chips of the left over broken pieces of Candles in the Mould so that the wick is not displaced from its central position.
- Gently fill Mould with clear paraffin at a lowest possible Temp. so that it does not melt the chips.
- Tap the side of the Mould to Release. Any trapped air between the Chunks.
- Put the Mould in the Water Bath containing Cold Water around 30°C upto the level of Wax inside the Mould.
- Top it up with some More Paraffin if required and allow it to cool.
- Give it a finishing touch and flatten its base.

MOULD FREE CANDLES

- Take a bowl and pour a sand in it.
- Level a sand properly to get a flat surface.
- Sprinkle the tho on sand to get a little bit of wet.
- Now take any shape like a do that we get a shape on it.
- Wick up the shape.
- flat the wax into that shape of sand.
- Keep it for an hour to get cool down and remove the sand.
- Now we will get a mould from candle.

JELLY CANDLE

- Take any kind of Mould as per required.
- Lightly brush the Mould with Any kind of oil with Brush.
- Wick up the Mould.
- Melt the jelly wax on the low flame.
- Now pour the melted jelly wax into the Mould.
- We can add water or decorative Material within the Jelly layers.
- Trim the wick upto the length.
- Let it be there in bottle for some hours then the jelly candle is ready.

GLASS BOTTLE CANDLE

- First we should take any kind of Glass Bottle.
- Then Brush the Bottle with some kind of Oil with Brush.
- Melt the wax with low flame.
- Now Pour the Melted wax into the Glass Bottle.
- Let it to be settle for some hours then the wax Candles is Ready.
- After this decorate the Glass bottle with any decorative Material around the bottle.
- In this way Glass bottle candle will be Ready.

Flameless

Candle

• Easy to use around your home day and night
flameless candles help create a warm, wavy
Atmosphere.

• Unlike Traditional Candles, flameless candles don't
Give off Any heat or smoke.

• Instead they are battery powered and designed to
flicker in a way that mimics Traditional Candles.
• Flameless candles can be programmed to come on
at Any time of the Day

Principal *K. Kumar*
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

A.S COLLEGE OF EDUCATION
SUBMITTED TO

MR. HARIKRISHAN

SUBMITTED BY: SAMAN

B.ED Ist SEM

ROLL NO 1057

Principal
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

[APPROACHES]

(1)

⇒ Activity Based

* Activity based Approach to achieve
Theoretical and practical census

Introduction

Within the context of modern Russian education's top speed development determined by the monopolistic status of the competency based doctrine^{one} of its key issues is the disturbance of balance of relation b/w the theoretical and practical components.

The cornerstone of the modern education is developing the practical component in a person. There are hundreds and maybe even thousands of works dedicated to the practice.

CORRESPONDENCE

METHODOLOGICAL FRAMEWORK
Methods of Research

Principal *Kuma*
A.S. College of Education
Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

The following theoretical methods will
used in analysis

- 2) Synthesis
- 3) Abstract Thinking
- 4) concretization
- 5) generalisation
- 6) Method of analogies
- 7) Modelling
- 8) Mental Experiment.

Stages of Research

The research was carried out in three stages

Stage 1 included the analysis of the
existing methodological approaches
to studying the problem.

Stage 2 included studying the historical
pedagogical materials on the problem
and elaborating the author's
position regarding the evaluation of
this material

Stage 3: Included generalization of the
data of the studied historical
pedagogical material.

Principal

A.S. College of Education

Kalai Majra, Khanna-Samrala Road

RESULTS

The Initial Ideas of the activity based approach as the most important methodological basis of Talyzina's pedagogy

* General foundations of activity based approach

The issues of activity have been studied by a great number of Russian philosophers and theoreticians L. P. Buva M. S. Kagan.

According to his works internalization and exteriorization reflect the dialectics of interaction of internal and external activity and in the long run define the process of development, establishment and formalities of a person by transferring external actions into internal.

The necessity is determined by the fact that the central content of child's development is its acquisition.

The main Ideas of ~~the~~ activity based approach:

Kuma

1) Activity is a system, an integrity consisting of different elements in such a way that only this whole system of elements in certain important connections and relations makes it possible to solve a task and implement activity.

2) The activity based approach is psychology of actions. The approach determines the possibility, so single out an adequate unit of analysis - an action. This provides the possibility to overcome functionalism action as a system cannot be reduced using only one function.

3) The principle difference of the activity based approach from all the others is that the real process is analysed the real process of interaction between a person and the world taken in its integrity.

4) The activity based approach is suited to understanding the social nature of a person. Accordingly to the understanding, a person is not born with "needs" logical thinkers

or knowledge about the world.

- 5) Three principles of the activity based approach are
 - a) inextinguishable connection of mind and activity
 - b) primacy of material forms and secondariness of psychic ones
 - c) the social nature of the laws of a person's psychic development.

6) In this activity based approach process of learning and educating are considered as activity. For a teacher it means that during the teaching process he has a task to form certain types of activity including cognitive one.

INDUCTIVE AND DEDUCTIVE

Introduction

These are basically two ways which a learner can achieve of a rule. Inductive path and deductive path.

Principal *Kumari*
 A.S. College of Education
 Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

Inductive

Inductive teaching and learning is an umbrella term that encompasses a range of instructional methods including inquiry learning, problem based learning, project based learning, case based teaching, discovery learning.

This is a student centred approach that allows learners to become deeply involved in the language they are studying and affords potential for reflection.

In the process of experiential learning they feel more important, are less passive, and do not get bored so easily during the lesson.

Deductive

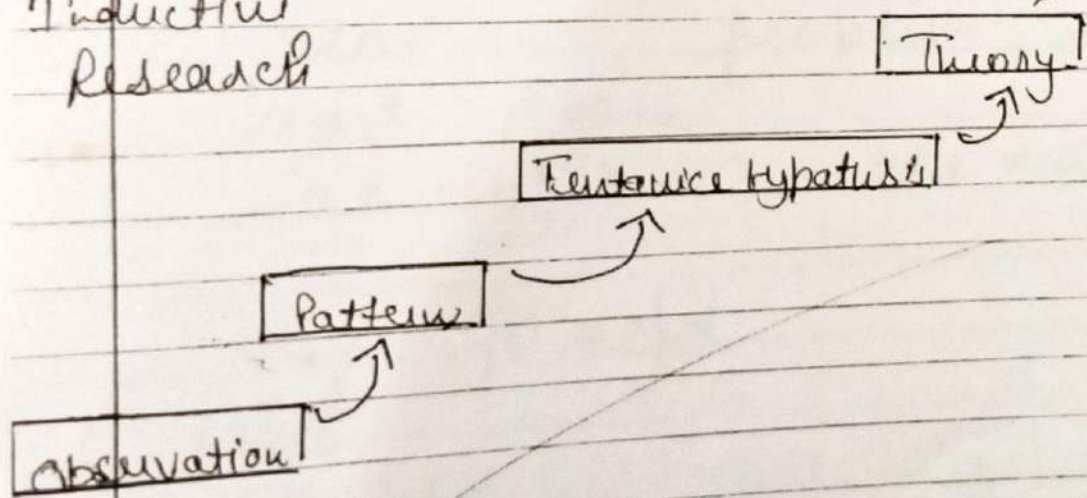
This technique simply means providing learners with the ready grammar rule, describing detail how the new structure is formed, what its components are, and in what type of context it can be used.

All the information is given

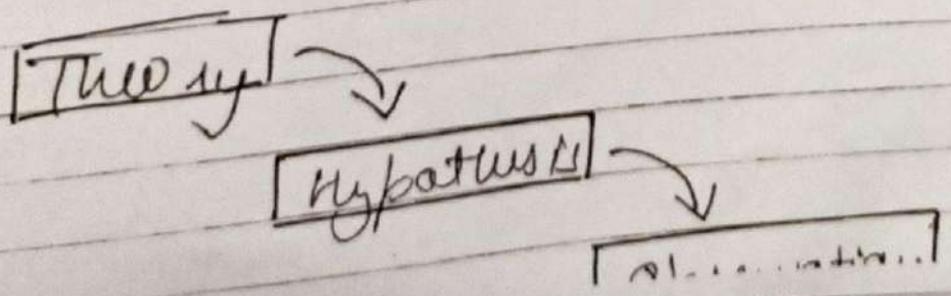
form of a mini-lecture, during with teacher usually employs grammatically technologically.

After the explanation, the learners are provided with examples illustrating the new structure, which they analyse.

Inductive Research



Deductive Research



Principal *Kumar*
 A.S. College of Education
 Kalal Majra, Khanna-Samrala Road

ANALYTIC AND SYNTHETIC METHOD

ANALYTIC METHOD

It proceeds from unknown to unknown problem into simple parts and then see how these can be recombined to find the solution. So we start with what to be found out and then think of further steps or possibilities the way correct the unknown built the known and find out desired result.

Procedure

Example If $a/b = c/d$ prove that $ac - 2b^2/b = 2bd/d$

Solution start from unknown i.e. to solve this problem we have to start from

$$ac - 2b^2/b = c^2 - 2b/d \text{ and get the}$$

$$\text{answer } db = c/d$$

Proof

To prove this way analytic method begin from the unknown

The unknown is $\sqrt{2 \log(a+b)}$

~~known as~~ $\log 3 + \log + \log b$

Now $2 \log(a+b) = 2 \log 3 + \log a + \log b$ is true

If $\log(a+b)^2 = \log 3^2 + \log a + \log b$ is true

If $\log(a+b)^2 = \log 9 + \log ab$ is true

If $\log(a+b)^2 = \log 9ab$ is true

If $(a+b)^2 = 9ab$ is true

If $a^2 + b^2 = 7ab$ which is known and true

Thus if $a^2 + b^2 = 7ab$ prove that $2 \log(a+b) = 2 \log 3 + \log a + \log b$

merit of Analytic Method.

- > It is logical method
- > It helps students in understanding and strengthen the urge to discover facts.

SYNTHETIC METHOD

It is opposite of Analytic

Procedure

Example If $a/b = c/d$ prove $a^2/b^2 = c^2/d^2$

Principal
 AS College of Education
 Kolar Malra, Khanna-Samrala Road
 Kolar Malra, Khanna-Samrala Road

2b/d/a.

solution ^{start} from unknown is to
 solve this problem we have
 to start from
 $a/b = c/d$ and get the answer.
 $a \cdot c = 2b^2/b = c^2 \quad 2bd/d$

Merit synthetic method

=> It is short method if clarity
 memory, it suit the teachers
 and it follow the same process
 as given in the text Book.

PROBLEM SOLVING

Team problem solving is studied using
 three different approaches, How
 teams go about solving their problems
 what types of behaviour contribute
 to effective problem solving. Teams
 should base their problem-solving
 approaches on a rational model
 of the process that six includes
 six stages of the problem, evaluation
 the problem, generating alternative

A.S. COLLEGE OF EDUCATION,
Topic..... Date.....
KALAL MAJRA

PEDAGOGY OF
PUNJABI

SESSION :- 2019-2021

SUBMITTED TO:

Mrs. Harjeet Kaur

SUBMITTED BY:

Baljeet Kaur

B.Ed

ਜਾਣ-ਪਛਾਣ :

ਪੈਂਗਾ ਰਚਨਾ ਕਰਨ ਤੋਂ ਭਾਵ ਹੈ, ਕਿਸੇ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇ 'ਤੇ ਪੈਂਗੇ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕਰਨਾ। ਉਹ ਤਾਂ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਨਿਬੰਧ, ਨਾਵਲ ਜਾਂ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕਰਨ ਲੱਗਿਆ ਉਸਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਪੈਂਗਿਆਂ ਵਿਚ ਵੰਡ ਕੇ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਸ ਵਿਚ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਨਵਾਂ ਵਿਚਾਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਨਵੇਂ ਪੈਂਗੇ ਤੇ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰੰਤੂ ਇਹ ਪੈਂਗਾ ਰਚਨਾ, ਜਿਸਨੂੰ ਅਨੁਭਵ ਵੀ ਆਖਦੇ ਹਨ, ਇਹ ਇੱਕ ਸੁਤੰਤਰ ਇਕਾਈ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਇਕੋ ਹੀ ਪੈਂਗੇ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪੈਂਗਾ ਰਚਨਾ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਿਸ਼ੇ 'ਤੇ ਕੀਤੀ ਜਾਦੀ ਹੈ, ਉਹ ਤਾਂ ਉਹ ਵਿਸ਼ੇ ਉਤੇ ਪੂਰੀ ਕਿਰਪਾ ਵੀ ਲਿਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਪਰ ਇਸ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਦੇ ਲਿਹਾਜ਼ ਤੇ ਇਸਦਾ ਆਕਾਰ ਸੀਮਤ ਰੱਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਬਿਆਨਬਾਜ਼ੀ ਵੀ ਪੂਰੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਕੋਈ ਬਿਆਨ ਅਧੂਰਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਪੈਂਗਾ ਰਚਨਾ ਕਰਨ ਲਈ ਕੁੱਝ ਜ਼ਰੂਰੀ ਗੱਲਾਂ :

1. ਪੈਂਗਾ ਰਚਨਾ ਕਰਨ ਦਾ ਇਕੋ-ਇਕੋ ਪੁਖਤਾ ਨੇਮ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਕ ਗੱਲ ਇਕੋ ਭਾਵ, ਇਕੋ ਸੰਕਲਪ ਜਾਂ ਇਕ ਵਿਚਾਰ। ਪੈਂਗੇ ਦੇ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਟਾਕ ਹੋਣ ਇਕੋ ਹੀ ਵਿਚਾਰ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਕਰਨ।
2. ਪੈਂਗਾ ਸਿਰਲੇਖ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪੈਂਗਾ ਸਿਖ ਕੇ ਸਿਰਲੇਖ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ।
3. ਕਿਸੇ ਵੀ ਪੈਂਗੇ ਨੂੰ ਨਿਕੇ-ਨਿਕੇ ਪੈਂਗਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡ ਕੇ ਨਹੀਂ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਪੈਂਗਾ ਘੱਟੋ ਘੱਟ 8-10 ਲਾਈਨਾਂ ਦਾ ਜਾਂ 60-70 ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਹੋਵੇ। ਪੈਂਗਾ ਵੀ ਇਸੇ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹੋਵੇ।
4. ਪੈਂਗਾ ਦੇ ਲੰਬਾਈ 90 ਤੋਂ 100 ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਜਾਂ 40-50 ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੀ ਵੀ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਪੈਂਗਾ 60-70 ਸ਼ਬਦਾਂ ਤਕ ਚੰਗਾ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
5. ਪੈਂਗੇ ਵਿਚ ਫਾਲਤੂ ਗੱਲਾਂ ਲਿਖਣ ਤੋਂ ਪਰਹੇਜ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪੈਂਗੇ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸੈਲੀ ਠੋਸ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

Topic.....

Date.....

6. ਧੈਰੇ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਗਤੀਰ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰੰਤੂ ਲੇਖਕ ਇਸਨੂੰ ਮਰਲ ਜਾਂ ਰੋਚਕ ਬਣ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।

ਧੈਰਾ ਰਚਨਾ ਦੀ ਉਦਾਹਰਣ:

ਮਕੂਲ ਵਿੱਚ ਸਫ਼ਾਈ

ਘਰ ਟਾਂਗ ਮਕੂਲ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਫ਼ਾਈ ਕਰੀ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਮਕੂਲ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਕਰਕਟ ਵਧੇਰੇ ਕਰਕੇ ਘਾਟੇ ਹੋਏ ਕਾਗਜ਼ਾਂ ਆਦਿ ਦਾ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਜੇ ਹਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਆਜਿਹਾ ਕੁਝ - ਕਰਕਟ ਖਿਲਾਰਨ ਤੋਂ ਸਕਿੰਚ ਕਰੇ ਤਾਂ ਗਦਗੀ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਫੈਲੇਗੀ। ਕੁਝ ਮਿੰਟੀ-ਘੱਟਾ ਤੇਜ਼ ਹਵਾ ਚੱਲਣ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਲਈ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਸਫ਼ਾਈ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਆਮ ਮਕੂਲਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਸਫ਼ਾਈ ਮੋਢਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਚੰਗੇ ਮਕੂਲਾਂ ਵਿੱਚ ਸਫ਼ਾਈ ਦਾ ਬਹੁਤ ਕੰਮ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਕੋਲੋਂ ਹੀ ਕਰਵਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਠਗ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਸਫ਼ਾਈ ਆਪ ਕਰਨ ਦੀ ਜਾਂਚ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਕਈਆਂ ਮਕੂਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸੁਫੀਆਂ ਦੇ ਸਫ਼ਾਈ ਮੁਕਾਬਲੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਇਸ ਲਈ ਹਰ ਸੁਫੀ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਆਪਣੇ ਆਲੇ ਦੁਆਲੇ ਨੂੰ ਇਕ ਪਾਸੇ ਘੱਟ ਗਿਆ ਕਰਨ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਮਾਫ਼ ਰੱਖਣ ਦੀ ਪੂਰੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ।

ਧੈਰਾ ਰਚਨਾ ਇਕ ਹੁਨਰ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਹੁਨਰਾਂ ਟਾਂਗ ਇਸ ਵਿੱਚ ਵਧੀਨਤਾ ਚਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਅਭਿਆਸ ਦੀ ਬਹੁਤ ਲੋੜ ਹੈ। ਧੈਰਾ ਰਚਨਾ ਦਾ ਕੰਮ ਇੰਨਾ ਮਰਲ ਨਹੀਂ, ਜਿੰਨਾ ਆਮ ਵਿਅਕਤੀ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਇਸਦਾ ਉਦੇਸ਼, ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਭਾਵ ਤੇ ਵਿਚਾਰ, ਖੁਫ਼ਾਦਸ਼ਾਈ ਤੇ ਰੋਚਿਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਯੋਜ਼ ਕਰ ਸਕਣ ਦੀ ਫੌਜ਼ਾਤ ਵਿਕਸਿਤ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਕੁਝ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਦਾ ਘੱਟਾ ਜਾ ਕੇ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਇਸ ਲਈ ਲਗਾਤਾਰ ਮਿਹਨਤ ਕਰਨੀ ਧੈਰੀ ਹੈ। ਧੈਰੇ ਦੀ ਸ਼ੈਲੀ ਸੁੰਦਰ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਬੋਲੀ ਠੁੱਕਰਾ, ਠੇਠ, ਮਰਲ ਤੇ ਮੁਹਾਵਰੇਰਾ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਗਠਨਤਾ, ਤਰਤੀਬ, ਸਥਿਰਤਾ, ਸੁਚੱਜਾ ਆਦਿ ਗੁਣ ਹੋਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ।

Topic.....

Date.....

ਚਿੱਠੀ ਘੱਤਰ

ਮਾਡੇ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਚਿੱਠੀ-ਘੱਤਰ ਦੀ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਤਾ ਹੈ। ਇਹ ਮਨੁੱਖੀ ਸਮਾਜ ਦਾ ਇੱਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅੰਗ ਹਨ। ਦੂਰ ਬੈਠੇ ਆਪਣੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰ, ਸ਼ੇਰੀਆਂ ਨਾਲ ਸਬੰਧਿਤ ਕਾਇਮ ਕਰਨ ਜਾਂ ਛਿੱਕਾਰ-ਵਟਾਰੇ ਲਈ ਚਿੱਠੀ-ਘੱਤਰ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਵਧੀਆ ਤੇ ਸਮਤਾ ਮਾਧਨ ਹੈ। ਮਾਡੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਚਿੱਠੀ-ਘੱਤਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਯੌਰ-ਯੌਰ ਤੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮੁੱਖ-ਮਾਦ ਜਾਣਨ ਲਈ, ਚੀਜ਼ਾਂ ਸੰਗਠਾਉਣ ਲਈ, ਦਫ਼ਤਰਾਂ ਦੇ ਕੰਮਾਂ ਕਾਰਾਂ ਲਈ, ਹਰ ਰੋਜ਼ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਲਿਖੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਅਜੋਕੇ ਸੋਧਾਇਲ ਫੋਨਾਂ ਨੇ ਨਿੱਜੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਦੀ ਕੀਮਤ ਕੁਝ ਘਟਾ ਦਿੱਤੀ ਹੈ, ਪਰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਅਸੀਂ ਫੋਨ ਤੇ ਸੰਪਰਕ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਸਬੰਧਿਤ ਕਾਇਮ ਕਰਨ ਲਈ ਚਿੱਠੀ-ਘੱਤਰਾਂ ਦਾ ਹੀ ਸਹਾਰਾ ਲੈਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਡਾਕਾਂ, ਰਜਿਸਟਰੀਆਂ, ਪਾਰਸਲ ਤੇ ਸਪੀਡ ਪੋਸਟਾਂ ਵੀ ਚਿੱਠੀ ਘੱਤਰ ਦੇ ਚਾਲਿਕੇ ਅੰਗ ਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।

ਮੁਕੁਲ ਵਿੱਚ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਕਈ ਢੰਗ ਦੇ ਬਿਨੈ-ਘੱਤਰ ਲਿਖਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਦਾਖਲਾ ਲੈਣ, ਛੁੱਟੀ ਲੈਣ, ਵਿਸੇ ਜਾਂ ਸੈਂਕੜੇ ਬਦਲਣ ਜ਼ਰਮਾਨਾ ਸੁਆਫ਼ ਕਰਾਉਣ ਜਾਂ ਸਰਟੀਫਿਕੇਟ ਆਦਿ ਲੈਣ ਲਈ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਮੁਕੁਲ ਦੇ ਮੁਖੀ ਨੂੰ ਬਿਨੈ ਘੱਤਰ ਲਿਖਣੇ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਅਸਲ ਵਿਚਕਾਰੀ ਦਾ ਵਾਰ, ਸਰਕਾਰੀ ਅਤੇ ਗੈਰ ਸਰਕਾਰੀ ਦਫ਼ਤਰਾਂ ਨਾਲ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਉਥੇ ਮਾਰੇ ਕੰਮ ਘੱਤਰ ਲਿਖ ਕੇ ਵੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਪੰਚਾਇਤਾਂ, ਮਿਊਨਿਸਪਲ ਕਮਿਟੀਆਂ, ਕਾਰਪੋਰੇਸ਼ਨਾਂ, ਜ਼ਿਲ੍ਹਿਆਂ, ਪ੍ਰਾਂਤ ਤੇ ਦੇਸ਼ ਤੱਕ ਦੇ ਸੁੱਖੀਆਂ ਤੇ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਲਈ, ਬਿਨੈ ਘੱਤਰ ਲਿਖਣੀ ਲੋੜ ਪਈ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਵਪਾਰਕ ਕੰਮਾਂ ਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚਿੱਠੀ ਘੱਤਰ ਦੁਆਰਾ ਲੱਖਾਂ-ਕਰੋੜਾਂ ਦਾ ਕੇ ਲੈਣ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਚਿੱਠੀ ਘੱਤਰ ਕਈ ਢੰਗ ਦੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ, ਜਿਵੇਂ:

(ੳ) ਨਿੱਜੀ ਜਾਂ ਘਰੇਲੀ ਘੱਤਰ

(ਅ) ਬਿਨੈ ਘੱਤਰ

(ੲ) ਵਪਾਰਕ ਘੱਤਰ

(ੳ) ਦਫ਼ਤਰੀ ਘੱਤਰ

Topic..... Date.....

(੯) ਅਰਧ ਸਰਵਾਰੀ ਯੱਤਰ

(੧) ਫੁਟਕਲ

(੩) ਨਿੱਜੀ ਜਾਂ ਘਰੇਲੀ ਯੱਤਰ:

ਇਹ ਯੱਤਰ ਆਪਣੇ ਮਿੱਤਰਾਂ ਸਰੋਸੀਆ ਪਰਿਵਾਰ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ, ਦੂਰ-ਨੇੜੇ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਅਤੇ ਜਾਣਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਨਿੱਜੀ ਜਾਂ ਘਰੇਲੀ ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਦੇਣ-ਸੈਣ, ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਵਿਚਾਰਨ ਅਤੇ ਸੰਪਰਕ ਕਾਇਮ ਰੱਖਣ ਲਈ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਚਿੱਠੀਆਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਯੱਤਰਾਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਜੀਵਨ ਦੀ ਕੋਈ ਵੀ ਗੱਲ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਇਸੇ ਯੱਥੇ ਇਹਨਾਂ ਯੱਤਰਾਂ ਦੀ ਵੰਨਗੀ ਜੀਵਨ ਜਿੰਨੀ ਹੀ ਬਹੁਪੱਖੀ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਆਥਿਨੈ ਯੱਤਰ:

ਆਥਿਨੈ ਯੱਤਰ ਟੁੱਧ-ਟੁੱਧ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਵਿਚ ਉਹਨਾਂ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਕਾਫ਼ੀ-ਕਾਫ਼ੀ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਬਾਰੇ ਖੋਲ੍ਹੀ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਥਿਨੈ-ਯੱਤਰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

(੯) ਵਪਾਰਿਕ ਯੱਤਰ:

ਇਹ ਯੱਤਰ ਵਪਾਰਿਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਜਾਂ ਵਪਾਰ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਅਤੇ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਵੱਲੋਂ ਵਪਾਰ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਯੱਤਰਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਵਪਾਰ ਬਾਰੇ ਕੋ ਵਾਰਨ ਇਹਨਾਂ ਯੱਤਰਾਂ ਨੂੰ ਵਪਾਰਿਕ ਯੱਤਰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

(੧੦) ਦਫ਼ਤਰੀ ਯੱਤਰ:

ਦਫ਼ਤਰੀ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਯੱਤਰ ਇਸ ਵੰਨਗੀ ਵਿਚ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।

(੧੧) ਅਰਧ-ਸਰਵਾਰੀ:

ਇਸ ਪੁਸ਼ਟ ਦੇ ਪੱਤਰ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਵਲੋਂ ਇਕ ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਦਫ਼ਤਰੀ ਕੰਮਾਂ ਬਾਰੇ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹੇ ਪੱਤਰਾਂ ਵਿਚ ਲਿਖਣ ਵਾਲੇ ਅਧਿਕਾਰੀ ਦੀ ਨਿਮੀ ਛੁਹ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

(ਕ) ਫੁਟਕਲ ਪੱਤਰ:

ਮਮਾਚਾਰ-ਪੱਤਰਾਂ, ਰੇਡੀਓ, ਟੈਲੀਵੀਜ਼ਨ ਆਦਿ ਨੂੰ ਬ੍ਰੋਗਰਾਮਾਂ ਬਾਰੇ ਲਿਖੀਆਂ, ਮੁੜਾ ਜਾਂ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਕਰਨ ਬਾਰੇ ਲਿਖੇ ਜਾਂਦੇ ਪੱਤਰ ਇਸ ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਵਿਚ ਆ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਚਿੱਠੀ ਪੱਤਰਾਂ ਦੀ ਫੀਡ ਬੇਵਲ ਇਠਾ ਨੂੰ ਲਿਖਣ ਦੀ ਇਹੀ ਸਮਝਣ ਲਈ ਹੀ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ।

ਹੋਜਾਨਾ ਮੀਵਨ ਵਿਚ ਵਿਕਰਤੀ ਨੂੰ ਹਰ ਪੁਸ਼ਟ ਦੇ ਪੱਤਰ ਲਿਖਣ ਦੀ ਸੋਚ ਖੈਂ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਣਾ ਇੱਕ ਕਲਾ ਹੈ। ਹਰ ਕਲਾ ਸਿੱਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਚਿੱਠੀ-ਪੱਤਰ ਲਿਖਣ ਬਾਰੇ ਕੁਝ ਸੋਢੇ ਨਕਤੇ ਪਿਆਰਨ ਵਿਚ ਰੱਖ ਕੇ ਅਭਿਆਸ ਨਾਲ ਚਿੱਠੀ ਪੱਤਰ ਸੁਚੱਜੇ ਢੰਗ ਨਾਲ ਲਿਖਣ ਦੀ ਜਾਚ ਆ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਚਿੱਠੀ-ਪੱਤਰ ਰਚਨਾ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਗੱਲਾਂ:

ਇਕ ਆਸਰਸ ਚਿੱਠੀ-ਪੱਤਰ ਰਚਨਾ ਲਈ, ਹੇਠ ਲਿਖੀਆਂ ਕੁਝ ਬੁਨਿਆਦੀ ਗੱਲਾਂ ਦਾ ਪਿਆਰਨ ਰੱਖਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ:

- 1) ਜਿਥੋਂ ਤੱਕ ਹੋ ਸਕੇ, ਚਿੱਠੀ ਸੁਖੀ ਤੇ ਸਾਫ਼-ਸਾਫ਼ ਲਿਖਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
ਤੋੜੀ ਹੱਥ - ਲਿਖਣ ਵਿਚ ਲਿਖੀ ਹੋਈ ਚਿੱਠੀ, ਖ਼ਾਪਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਤੇ ਬਹੁਤ ਸਾਫ਼ਾ ਢੰਗ ਪੜ੍ਹਦੀ ਹੈ।
- 2) ਚਿੱਠੀ ਨੂੰ, ਦਿਲੀ ਗਵਾਂ ਦੀ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਇੰਨਾ ਸਪੱਸ਼ਟ ਰੂਪ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਅਗਲੇ ਤੇ ਜਾਣੂ ਵਰਗਾ ਅਸਰ ਹੋਵੇ। ਚਿੱਠੀ ਵਿਚ ਕੋਈ ਫੀਡ ਕੀਤੀ ਨਹੀਂ ਚਾਹੀਦੀ।
- 3) ਚਿੱਠੀ ਕੁਝੇ ਸਮੇਂ ਤੇ ਸਾਦਾ ਢੰਗ ਵਿਚ ਸਹਿਜਤਾ ਨਾਲ ਲਿਖੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

4. ਚਿੱਠੀ ਵਿਚ ਜੋ ਕੁਝ ਲਿਖਣਾ ਹੈ, ਉਸ ਬਾਰੇ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਣ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਯੁਕਤ ਊਰ ਤੇ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸਦਾ ਭਾਵ ਹੈ ਕਿ ਚਿੱਠੀ ਦੀ ਸਮੱਗਰੀ ਤੇ ਯੋਗ ਡਰਤੀਬ ਬਾਰੇ ਪਹਿਲਾਂ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਲੈਣੀ ਉਚਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
5. ਚਿੱਠੀ ਦੀ ਤਾਮਾ ਬਾਰੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸੁਚੇਤ ਹੋਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਚਿੱਠੀ ਦੀ ਤਾਮਾ, ਉਸਦੇ ਵਿਸ਼ੇ-ਵਸਤੂ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਦੇ ਆਨੰਦਕੁਲ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
6. ਚਿੱਠੀ ਦੀ ਤਾਮਾ ਵਿਆਕਰਮਿਕ ਤੇ ਸਬਦਾ-ਜੋੜਾ ਦੀਆਂ ਗਲਤੀਆਂ ਬਿਲ ਕੁਲ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ।
7. ਚਿੱਠੀ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਖੋਲ੍ਹ, ਮਿਠਾਹੀ ਨਾਲ ਹੀ ਲਿਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।
8. ਚਿੱਠੀ ਵਿਚ ਆਪਣਾ ਪਤਾ, ਖਾਪਤ ਕਰਤਾ ਦਾ ਪਤਾ, ਸੰਬੰਧਨੀ ਖੋਲ੍ਹ, ਅਤੇ ਸਬਦ ਤੇ ਸਿਤੀ ਲਿਖਣ ਵੱਲ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਚਿੱਠੀ-ਯੱਤਰ ਰਚਨਾ ਦਾ ਢੰਗ ਤੇ ਤਕਨੀਕੀ ਨੁਕਤੇ:

ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਚਿੱਠੀ-ਯੱਤਰ ਰਚਨਾ ਦੇ ਢਾਂਚੇ ਨੂੰ ਚਾਰ ਭਾਗਾਂ ਵਿਚ ਵੰਡਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ - ਆਰੰਭ, ਸੰਬੰਧਨੀ ਪਦ, ਚਿੱਠੀ ਦਾ ਢਾਂਚਾ, ਅਤੇ ਅਤੇ ਸਿਰਜਣ-ਨਾਵ।

ਦਫਤਰੀ ਅਤੇ ਵਪਾਰਿਕ ਚਿੱਠੀਆਂ ਦੇ ਲਿਖਣ ਢੰਗ ਅਤੇ ਸ਼ੈਲੀ ਵਿਚ ਨਿਸ਼ੀਆਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਨਾਲੋਂ ਕਾਫੀ ਅੰਤਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਦਫਤਰੀ ਤੇ ਵਪਾਰਿਕ ਚਿੱਠੀ ਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨਸਿਖਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਢੰਗ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

1. ਵੱਲੋਂ: ਤੇਜ਼ ਵਾਲੇ ਦਾ ਪਤਾ
2. ਵੱਲ: ਖਾਪਤ ਕਰਤਾ ਦਾ ਪਤਾ
3. ਵਿਸ਼ਾ (ਮੀਮੋਲੈਬਰ, ਸਿਤੀ ਤੇ ਲਿਖਣ ਦੀ ਥਾਂ)
4. ਸੰਬੰਧਨੀ ਪਦ
5. ਢਾਂਚਾ - ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਦਾ ਵੇਰਵਾ
6. ਅੰਤਿਮ ਪਦ
7. ਊਰੀਕ - ਯੱਤਰ ਲਿਖਣ ਦਾ ਢੰਗ

1. ਫੁੱਲੋਂ :

ਦਫਤਰੀ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਣ , ਸਮੇਂ ਸਤ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਲਿਖਣ ਵਾਲੇ ਦਾ ਪੁਰਾ ਪਤਾ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਿਰਨਾਵੇ ਤੇ ਉਮਨੂੰ ਜੁਆਬ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਪਤੇ ਦੇ ਹੇਠਾਂ , ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਣ ਦੀ ਮਿਤੀ ਵੀ ਲਿਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜਿਵੇਂ:

80 , ਗਾਰਡਰ ਕਾਲੋਨੀ,
ਜਲੰਧਰ।
25 ਜੁਲਾਈ , 20...

ਪਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਇਸਤਿਹਾਨੀ ਅਨੁਮਾਮਨ ਅਨੁਸਾਰ , ਇਹ ਪਤਾ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲਿਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ -

ਪਰੀਖਿਆ ਤਵਨ,
ਉ. ਅ. ਦ. ਕੇਂਦਰ,
----- ਸਰਿਰ।
25 ਜੁਲਾਈ , 20...

2. ਫੁੱਲੋਂ :

ਇਸ ਸਿਰਲੇਖ ਅਧੀਨ ਚਿੱਠੀ ਖ਼ਾਪਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਦਾ ਪਤਾ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ 'ਫੁੱਲੋਂ' ਵਾਲੇ ਪਤੇ ਤੋਂ ਹੇਠਲੀ ਸਾਈਨ ਤੋਂ ਆਰੰਭੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਨਿੱਜੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿਚ ਇਹ ਪਤਾ , ਸੱਤ ਤੋਂ ਹੇਠਾਂ ਲਿਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਰਕਾਰੀ ਤੇ ਵਪਾਰੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿਚ ਇਸਤੋਂ ਹੇਠਲੀ ਸਾਈਨ ਵਿਚ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖਣ ਵਾਲੇ ਦਫਤਰ ਦਾ ਡਾਇਰੀ ਨੰ. ਸਥਾਨ ਤੇ ਮਿਤੀ ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

3. ਵਿਸ਼ਾ :

ਨਿੱਜੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿਚ ਲਿਖੀ ਚੋੜ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਦਫਤਰੀ ਤੇ ਵਪਾਰੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿਚ , ਲਿਖੀ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਚਿੱਠੀ ਵਿਚ ਵਿਸ਼ਾ ਲਿਖਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਚਿੱਠੀ ਕਿਸ ਬਾਰੇ ਲਿਖੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਸਤੋਂ ਚਿੱਠੀ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਹੀ , ਉਸਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਬਾਰੇ ਪਤਾ ਲੱਗ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਫਸਰ ਵਿਸ਼ਾ ਪੜ੍ਹਕੇ , ਪੁਰੀ ਚਿੱਠੀ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹੇ ਬਗੈਰ ਸਬੰਧਿਤ ਕਾਮ ਕਰ ਕੇਸ ਉਸ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

Topic.....

Date.....

ਇਸ ਨਾਲ ਸਮਾਂ ਤੇ ਸ਼ਕਤੀ ਦੀ ਬੱਚਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

੫) ਮੰਬੋਪਨੀ ਸ਼ਬਦ:

ਮੰਬੋਪਨੀ ਸ਼ਬਦ ਊਰੀਕ ਤੋਂ ਆਗਈ ਸ਼ਬਦ
ਇਸ ਬੱਚੇ ਬੋਲੇ ਤੇ ਸਿੱਧੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਨਿੱਜੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿਚ, ਛੋਟੇ
-ਛੋਟੇ ਸਾਕਾਂ- ਮੰਬੋਪਨੀਆਂ ਤੇ ਸਿੱਧਤਾ ਭਾਵਾਂ ਦੇ ਫਰਕ ਵਰਕੇ, ਇਹ
ਵਿਚ ਗਾਫੀ ਭੇਦ-ਭਾਵ ਤੇ ਵਧੇਰੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਗਰੇਜੀ ਵਿਚ ਠਾਂ ਮੁੜ
ਸਈ 'ਪਿਆਰੇ' ਜਾਂ 'ਮੇਰੇ ਪਿਆਰੇ' ਲਿਖਣ ਦਾ ਵਿਵਾਜ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਠੀ
ਇਹ ਮੰਬੋਪਨੀ ਸ਼ਬਦ ਆਮ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਆਉਣ ਲਗਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ- ਪਿਆਰੇ
ਪਿਆਰੀ, ਪਿਆਰੇ ਵੀਰ ਜੀ' ਆਦਿ। ਸਰਕਾਰੀ/ਵਪਾਰੀ ਖੱਤਰਾਂ
ਵਿਚ ਜਿਸ ਅਫਸਰ ਜਾਂ ਅਧਿਕਾਰੀ ਨੂੰ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖੀ ਜਾਵੇ, ਮੰਬੋਪਨੀ
ਯੱਦ ਉਸਦੀ ਖੱਦਵੀ ਅਨੁਸਾਰ ਲਿਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। 'ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ/ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ
ਜੀ' ਮੰਬੋਪਨੀ ਸ਼ਬਦ ਹਰ ਥਾਂ ਵਰਫੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ।

੬) ਚਿੱਠੀ ਦਾ ਢਾਂਚਾ:

ਨਿੱਜੀ ਚਿੱਠੀਆਂ ਵਿਚ, ਮੰਬੋਪਨੀ ਯਦ ਤੋਂ ਬਾਅਦ
ਨਮਸਕਰੇ ਜੋ ਵਿੱਚ ਜਾਂ ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਆਦਿ ਲਿਖੀਆਂ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਫਿਰ
'ਅਸੀਂ ਗਲੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹਾਂ। ਤੁਹਾਡੀ ਮੁੱਖ ਮੰਗਦੇ ਹਾਂ।' ਆਦਿ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖੇ
ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਫਿਰ ਅਸਲੀ ਗੱਲ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

੭) ਅੰਤਿਮ ਯਦ:

ਚਿੱਠੀ ਵਿਚ ਆਖਣੀ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਕਹਿਣ ਉਪਰੰਤ
ਅਖੀਰ ਵਿਚ ਸਿਹੜੇ ਸ਼ਬਦ ਅਸੀਂ ਆਪਣਾ ਮੰਬੋਪਨੀ, ਸਨੇਹ ਜਾਂ ਸਿਖਤਾ
ਬੁਗਟ ਕਰਨ ਸਈ ਲਿਖਦੇ ਹਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਅੰਤਿਮ ਯਦ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ
ਹੈ। ਜਿਵੇਂ- ਆਪਣਾ ਸਖੁੱਤਰ, ਤੁਹਾਡਾ ਵੀਰ ਆਦਿ।

੮) ਸਿਮਤੀ:

ਦਫਤਰੀ ਖੱਤਰਾਂ ਉਤੇ ਉਸ ਦਿਨ ਦੀ ਸਿਮਤੀ ਲਿਖਣੀ ਚਾਹੀਦੀ
ਹੈ, ਜਿਸ ਦਿਨ ਉਹ ਲਿਖੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸਦਾ ਵੇਰਵਾ ਵੇਖੋ ਜਰੂਰੀ
ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

Topic.....Date.....

ਚਿੱਠੀ-ਪੱਤਰਾਂ ਦੀ ਰੂਪ-ਰੇਖਾ

1. ਨਿੱਜੀ-ਚਿੱਠੀਆਂ:

ਯਗੀਦਿਆ ਤੇਹਨ,
ਕੇਂਦਰ, ਓ. ਆ. ਏ.

15 ਨਵੰਬਰ, ----।

ਮਝਿਅਰਯੋਗ ਮਾਤਾ ਜੀਓ,

ਤੁਹਾਡਾ ਸਯੁੱਤਰ,
ਕੋਲ ਨੀ. -----

2. ਵਪਾਰਕ ਚਿੱਠੀਆਂ:

ਵੱਲੋਂ:

ਪਾ੦ ਸਿਵਲ ਸਾਈਨਸ,
ਜਲੰਧਰ ਸਕੂਲ।

15 ਨਵੰਬਰ, ----।

ਵੱਲੋਂ:

ਮੈਨੇਜਰ ਸਾਹਿਬ,

ਮੈਂਟੀ ਯਥ ਲਿਸਟਰਜ਼,

ਮਾਈ ਗਾਰੀਗੋਟ,

ਜਲੰਧਰ ਸਕੂਲ।

ਵਿਸ਼ਾ: ਸਾਇਬੇਰੀ ਲਈ ਪੁਸਤਕ ਤੇਜ਼ ਬਾਰੇ।

ਸ਼੍ਰੀਮਾਤ ਸੀ;

ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਹਿੱਤ

Topic.....Date.....

3. ਸਰਕਾਰੀ ਖੇਤਰ:

ਟੋਲ : ਖਿਮੀਪਲ,
ਸੀ. ਟੀ. ਬਾਲਜ਼ ਆਫ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ,
ਜਲੰਧਰ।

ਟੋਲ : ਨਿਰਦੇਸ਼ਕ,
ਮਿੱਥਿਆ ਟਿਊਟਰ (ਬਾਲਜ਼) ਪੰਜਾਬ,
ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ।

ਮੀਮੋ ਨੰ. 60-ਬੀ/੫-ਮਿਤੀ-ਮਈ 16, ਜਲੰਧਰ, 20...

ਵਿਸ਼ਾ : ਬਾਲਜ਼ ਮਟਾਫ ਦੀਆਂ ਤਨਖਾਹ-ਦਰਾਂ ਸੋਧਣ ਬਾਰੇ।

ਹਵਾਲਾ : ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਖੇਤਰ ਨੰ : ਜ-ਸ/1540 ਮਿਤੀ ਨਵੰਬਰ 15, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ, 20...

ਸ਼੍ਰੀਮਾਤ ਜੀ,
ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਕਿ

- ਨੱਥੀ ਦਸਤਾਵੇਜ਼ਾਂ ਦਾ ਛੇਦਾ -
- 1) ਮਟਾਫ ਮੁੱਢੀ (ਖੇਤਰ ਨੰ: 2)
 - 2) ਮੁਦਲੀਆਂ ਤਨਖਾਹ ਦਰਾਂ ਦੀ ਮੁੱਢੀ (ਖੇਤਰ ਨੰ: 3)

ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਸਿਮਟਾਮਪਤਰ,
(ਹਮਤਾਖਰ)
ਖਿਮੀਪਲ,
ਸੀ. ਟੀ. ਬਾਲਜ਼ ਆਫ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ,
ਜਲੰਧਰ।
(ਸੋਧ)

Topic.....

Date.....

ਮੁਹਾਵਰੇ

ਮੁਹਾਵਰਿਆਂ ਨਾਲ ਤਾਮਾ ਵਧੇ ਪ੍ਰਗਟਮਾਲੀ ਬਣਦੀ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਾਲ ਗੱਲ ਸੁਖਿਯ ਤੇ ਰੋਚਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਕਹੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਦਾਹਰਨ ਲਈ 'ਆਵਾਜ਼ ਹੀ ਉਹ ਜਾਣਾ' ਮੁਹਾਵਰਾ ਲੈ ਲਈਏ।

ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਸੰਸਥਾ ਦੀ ਕੋਈ ਬਿਗਾਈ ਆਮ ਤੋਂ ਉਲਟ ਨੀਵੇਂ ਪੱਧਰ ਦੀ ਜਾਂ ਆਯੋਗ ਹੋਵੇ ਤਦ ਉਸ ਸੰਸਥਾ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਗਲਤ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਣ ਲਈ ਇਹ ਮੁਹਾਵਰਾ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮੁਹਾਵਰਾ ਨਾ ਵਰਤਣ ਦੀ ਗਲਤ ਵਿਚ ਬੋਲਣ ਜਾਂ ਲਿਖਣ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਉਸ ਸੰਸਥਾ ਦੀ ਆਯੋਗਤਾ ਬਿਖਾਨ ਕਰਨ ਲਈ ਇਸਦਾ ਨਾਲ ਦੱਸਣ ਪਵੇਗਾ। ਤਦ ਹੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਇਹ ਬਿਖਾਨ ਇਸ ਮੁਹਾਵਰੇ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਾਲ ਯਥੇ ਪ੍ਰਗਟ ਜਿੰਨਾ ਅਸਰਦਾਰ ਨਾ ਹੋਵੇ।

ਮੁਹਾਵਰੇ ਦਾ ਇਕ ਗੁਣ ਇਹ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗੱਲ ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਸੁਫਲੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਿਵੇਂ ਆਂਗ ਨਾਲ ਖੋਲ੍ਹਣਾ, ਸੱਜੀ ਬਾਹ ਫੌਰ, ਕਣਕ ਨਾਲ ਘੁਣ ਚਿਮਣਾ।

ਉਪਰੋਕਤ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਗੱਲ ਦਾ ਪ੍ਰਗਟ ਤੀਖਣ ਕਰਨ ਲਈ ਗੱਲ ਵਧਾ ਕੇ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ; ਜਿਵੇਂ - ਆਮਮਾਨ ਦੇ ਠਾਠੇ ਤੋੜਨਾ, ਸਲ - ਬਲ ਕੇ ਕੋਲੇ ਹੋਣਾ, ਕੁਸ਼ੇ ਵਿਚ ਸਮੁੰਦਰ ਬੰਦ ਕਰਨਾ।

ਮੁਹਾਵਰੇ ਦਾ ਯੁਗ ਮੁੱਲ ਉਸਦੀ ਦੁੱਕਣੀ ਵਰਤੋਂ ਨਾਲ ਹੀ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਯਜ਼ਾਬੀ ਬੋਲਣ ਵਾਲੇ ਆਮ ਲੋਕ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਅਨੁਪਭੁ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹਨ। ਯਜ਼ਾਬੀ ਦੇ ਮੁਹਾਵਰਿਆਂ ਦੀ ਸਹਿਜ ਸੁਭਾਅ ਹੀ ਦੁੱਕਣੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਮੁਹਾਵਰੇ ਦੀ ਸੁਚੱਜੀ ਵਰਤੋਂ ਜਿਸੇ ਤਾਮਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਮਾਲੀ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਸਦੀ ਸੁਚੱਜੀ ਵਰਤੋਂ ਪ੍ਰਗਟ ਨੂੰ ਗੁਫਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।

ਕਈ ਮੁਹਾਵਰਿਆਂ ਦੇ ਆਰਥ ਤਿੰਨ-ਤਿੰਨ ਦਮਣੇ ਮੰਤਵ ਨਹੀਂ ਹਨ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਧਾ ਵਿਚ ਵਰਤ ਕੇ ਬਹੁਤ ਸੁਫਲੇ ਸਮਝਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ ਯਜ਼ਾਬੀਆਂ ਡਿਊਟੀਆਂ, ਦੁੱਠੇ ਯੁਗ ਵਿਚ ਪੈਣਾ, ਨਾਨੀ ਚੋਰੇ ਆਉਣਾ।

ਆਮ ਵਰਤੋਂ ਜਾਂਦੇ ਮੁਹਾਵਰਿਆਂ ਦੇ ਵੀ ਵਧਾ ਗਾਰੀ ਆਰਥ

Topic.....

Date.....

ਸਮਝਣੇ ਤੇ ਸਮਝਾਉਣੇ ਮੈਂਬੇ ਹਨ ਪਰ ਠੀਕ-ਠੀਕ ਦੱਸਣੇ ਮੈਂਬੇ
 ਹਨ ਇਸ ਲਈ ਆਮ ਗੱਲਬਾਤ ਵਿਚ ਸੁਹਾਵਰੇ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ
 ਵਾਲਾ ਕੋਈ ਵੀ ਵਿਅਕਤੀ ਵੱਖਰੇ ਤੌਰ ਤੇ ਬਿਆਰੇ ਆਰਥ ਠੀਕ
 ਦੱਸਦਾ। ਸੁਹਾਵਰੇ ਦੇ ਆਰਥ ਉਮਰੀ ਵਰਤੋਂ, ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਆਪ
 ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਭਾਗ ਵਿਚ ਸੁਹਾਵਰਾਂ ਗੱਲ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ
 ਸਪੱਸ਼ਟ ਕਰਨ ਵਿਚ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸ ਵਾਕ ਵਿਚ ਸੁਹਾਵਰੇ ਦੀ
 ਵਰਤੋਂ ਸਫਲ ਮੰਨੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

‘ਸੁਹਾਵਰਾ’ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਆਰਥ ਹੈ - ‘ਸੁਹਿ ਚੜ੍ਹਿਆ ਹੋਇਆ’
 ਕੁੱਝ ਉਦਾਹਰਣਾਂ:

1. ਅਸਮਾਨ ਦੇ ਤਾਰੇ ਤੋੜਨਾ: (ਵੱਧ ਵੱਧ ਕੇ ਗੱਲਾਂ ਬਣਾਉਣੀਆਂ) -
 ਗੱਲਾਂ ਨਾਲ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਅਸਮਾਨ ਦੇ ਤਾਰੇ ਤੋੜਦੇ ਹੋ, ਪਰ ਆਪਣੇ ਕੰਮ
 ਤੇ ਅਸਲ ਉੱਕਾ ਕੀ ਕਰਦੇ।

2. ਇਕ ਐੱਥ ਨਾਲ ਫੇਖਣਾ: (ਇਕੋ ਜਿਹਾ ਸਮਝਣਾ) : ਆਕਸਰ
 ਤੇ ਸਮਝਮਾਨਾਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਐੱਥ ਨਾਲ ਫੇਖਦਾ ਸੀ।
 ਬਾਰਮਾਰ ਹਿੰਦੁਆ

3. ਈਦ ਦਾ ਚੰਨ ਹੋਣਾ: (ਕਦੇ - ਕਦਾਈਂ ਮਿਲਣਾ) : ਕਿੱਥੇ ਗਏ
 ਹੋ? ਤੁਸੀਂ ਛਾ ਈਦ ਦਾ ਚੰਨ ਹੋ ਗਏ ਹੋ।

4. ਖੁੱਬ ਠੱਪਣੀ: (ਖ਼ਾਤ ਸੁਆਹਨੀ) : ਆਸਟ ਦੀ ਛਿ ਵਾਰੀ
 ਆਈ ਖੁੱਬ ਠੱਪੇ ਕਿ ਸੁਫ ਕੇ ਉੱਠ ਜੋਗਾ ਨਾ ਕਹੋ।

ਅਖਾਉਤਾਂ

ਸੁਹਾਵਰਿਆਂ ਵਾਂਗ ਅਖਾਉਤਾਂ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਵੀਮਲੀ ਸਰਮਾਇਕਾ ਹਨ। ਅਖਾਉਤਾਂ ਨੂੰ ਅਖਾਣ ਜਾਂ ਕਹਾਣੀ ਵੀ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਖਾਉਤ ਅਭਿਜਾ ਵਾਕ ਜਾਂ ਉਕ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮੂੰਹ ਚੜ੍ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲਣ ਵਾਲੇ ਗਵੇਂ ਉਹ ਯਕੁੰ ਕੇ ਜਾਂ ਅਠਪੜ ਬੋਲਚਾਲ ਦੀ ਬੋਲੀ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬੀ ਅਖਾਉਤਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਆਮ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਗੁੰਦਰੀ, ਮਖਿਏ ਅਤੇ ਸਰਲ ਕੇ ਕਾਰਨ ਅਖਾਉਤ ਗੱਲ-ਬਾਤ ਦੇ ਘੁੰਮਣ ਨੂੰ ਨਾ ਕੇਵਲ ਵਧਾਉਂਦੀ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਗੱਲ ਕਹਿਣ ਵਾਲੇ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ ਵੀ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਅਖਾਉਤ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ-ਅਨੁਭਵ, ਵਿਹਾਰ, ਨਿਰੰਨੇ ਅਤੇ ਮੋਚ ਨੂੰ ਦਿਲ-ਖਿੱਚਦੇ ਅਤੇ ਗੁੰਦਰੇ ਸੁਬਰਾਂ ਵਿਚ ਘੁੰਮਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਵਿਚ ਜੀਵਨ ਤੋਂ ਬੰਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਇਹ ਅੱਟਲ ਸਚਾਈਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਖਾਣਾਂ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਕੋਮ ਦੀ ਸਦੀਆਂ ਦੀ ਸੁਫਲ ਸਿਕਾਣਯ ਅਤੇ ਮੋਚ ਸੰਤੋਸ਼ੀ ਯਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਸਹਾਯਕਾਂ, ਸਤਿ ਜਨਾਂ ਅਤੇ ਤਗਤਾਂ ਦੇ ਮੂੰਹੋਂ ਸੁੱਤੇ ਮਿਥ ਨਿਕਲੇ ਵਾਕ, ਆਪਣੇ ਆਪ ਹੀ ਅਖਾਣ ਦਾ ਰੂਪ ਯਾਰਨ ਕਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਕੁੱਝ ਉਦਾਹਰਨਾਂ ਹਨ:

- ‘ ਨਾਨਕ ਦੁਖੀਆ ਸੁਭੁ ਮਮਿਰਾ ।’
- ‘ ਸਨ ਜੀਠੈ ਜਗਿ ਜੀਤਾ ।’
- ‘ ਦਾਬੈ ਹੱਥ ਨ ਅਧੜੇ ਆਖੇ ਥੁਕੋੜੀ ।’
- ‘ ਨਿਵੈ ਸੁ ਗਉਗਾ ਹੋਇ ।’

ਲਗਾਤਾਰ ਵਰਤੋਂ ਨਾਲ ਇਹ ਅਖਾਣ ਸਰਬ-ਪਰਵਾਨ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅਰਥ ਯੱਕ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਰੂਪਕ ਅਖਾਣ ਪੱਖੋਂ ਅਖਾਣ, ਵਕਰਿ ਜਾਂ ਸੁਹਾਵਰੇ ਨਾਲੋਂ ਵੱਡਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਬਹੁਤੇ ਅਖਾਣ ਮੋਲਦੇ ਤੁਕਾਤੇ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਇਕ ਲੈਕ, ਤਾਲ ਤੇ ਸੁਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ, ਇਹ ਸਹਿਜ ਸੁਤਾ ਲੋਕਾਂ

Topic.....

Date.....

ਦੇ ਮੂੰਹ ਚੜ੍ਹ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਜੁਝੇ ਮੌਕਿਆ ਤੇ ਬੋਲੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ:

‘ਇਕ ਅਨਾਰ ਮੈਂ ਬੀਮਾਰ’

‘ਉੱਚੀ ਦੁਕਾਨ ਤੇ ਛਿੱਕਾ ਪਕਵਾਨ’

‘ਧੱਚੇ ਨਹੀਂ ਧੋਲਾ, ਕਰਦੀ ਮੇਲ-ਮੇਲਾ’

‘ਉਹ ਫਿਰੇ ਨੱਥ ਘੁੰਮਾਉਣ ਨੂੰ, ਉਹ ਫਿਰੇ ਨੱਥ ਵਢਾਉਣ ਨੂੰ।’

‘ਮੱਈ ਨਾ ਬੁਲਾਈ ਮੈਂ ਲਾੜੇ ਦੀ ਤਾਈਂ ਆਇ’

ਕੁਝ ਉਦਾਹਰਣਾਂ:

1. ਮੱਈ ਨਾ ਬੁਲਾਈ ਮੈਂ ਲਾੜੇ ਦੀ ਤਾਈਂ: (ਗਿੱਮੇ ਦੇ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਬਿਠਾ ਪੁੱਛੇ ਵਖਲ ਦੇਣੇ)

ਮੋਹਨ - (ਮਨਜੀਤ ਤੇ ਸੁਰਜੀਤ ਨੂੰ ਲੁਕਾਉਣ ਵੇਲੇ) - ਉਏ ਸੁਰਬੋ, ਕਿਉਂ ਲੜਦੇ ਹੋ? ਸਿਖਾਓ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਦਿਆਂ।

ਮਨਜੀਤ - ਉਜਾਹ! ਆਇਆ ਵੱਡਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰਾਉਣ ਵਾਲਾ, ਆਖੋ

‘ਮੱਈ ਨਾ ਬੁਲਾਈ ਤੇ ਮੈਂ ਲਾੜੇ ਦੀ ਤਾਈਂ’। ਅਸੀਂ ਆਖੇ ਨਜ਼ਿੱਠ ਲਵਾਂਗੇ।

2. ਜੀਹਦੀ ਕੋਠੀ ਦਾਣੇ ਉਹਦੇ ਕਮਲੇ ਵੀ ਸਿਆਣੇ: (ਅਮੀਰ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ)

ਧੀਆ - ਪੁੱਛ ਸੁਰਬ ਹੁੰਦੇ ਹੋਇਆ ਵੀ ਸਿਆਣੇ ਸਮਝੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ) -

ਸੀਤਾ - ਅਜੀਏ, ਸੀਤਾ! ਬਿਮਲ ਸਾਗੀਆ ਕੁੜੀਆਂ ਤੇ ਨਾਲਾਇਕ

ਦੇ ਤੇ ਸੁਰਬ ਤੇ ਵੀ ਬੜੀਆਂ ਕਰਦੀ ਦੇ, ਧਰ ਤੈਂ ਜੀ ਫਿਰ ਵੀ

ਉਸਦੀ ਸੁਲਾਘਾ ਕਰਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ ਤੇ ਲਿਖ ਵੀ ਵਧੇਰੇ ਦਿੰਦੇ ਨੇ।

ਸੀਤਾ - ਠੀਕ, ਉਹ ਹੋਈ ਵੱਡੇ ਮੇਠ ਦੀ ਧੀ। ਤੈਂ ਨਹੀਂ ਕਹੀਂ ਧਰਾ,

‘ਜੀਹਦੀ ਕੋਠੀ ਦਾਣੇ, ਉਹਦੇ ਕਮਲੇ ਵੀ ਸਿਆਣੇ’

Topic.....

Date.....

ਸੰਵਾਦ

ਦੋ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਜਾਂ ਉਸ ਤੋਂ ਵੱਧ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਜਾਣ ਗੱਲਬਾਤ ਨੂੰ ਸੰਵਾਦ ਜਾਂ ਫਾਰਟਾਲਾਧ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਕੀਤੀ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਗੱਲਬਾਤ ਦਾ ਦੰਗਾ ਟੁੱਟਣ-ਟੁੱਠ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਸੰਵਾਦ ਉਹਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਲਿਖੇ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਲਿਖਿਤ ਸੰਵਾਦ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਸੰਵਾਦ ਲਿਖਣ ਸਮੇਂ ਧਿਆਨਯੋਗ ਗੱਲਾਂ:

- 1) ਸੰਵਾਦ ਛੋਟਾ ਤੇ ਸਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
- 2) ਸੰਵਾਦ ਦੀ ਤਾਮਾ ਸਰਲ ਤੇ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
- 3) ਸੰਵਾਦ ਲਿਖਣ ਸਮੇਂ ਵਿਸ਼ੇ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰੱਖਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਸੰਵਾਦ ਦੀ ਉਦਾਹਰਣ:

ਸ਼ਾਮ - ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਆਕਾਸ਼ ਧਿਤਾ ਜੀ।

ਧਿਤਾ - ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਆਕਾਸ਼ ਯੁੱਤਰ।

ਸ਼ਾਮ - ਧਿਤਾ ਜੀ ਮੈਨੂੰ, ਦੋ ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪਏ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ।

ਧਿਤਾ - ਦ ਖੁੱਤ ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਕਰਨੇ ਹਨ?

ਸ਼ਾਮ - ਧਿਤਾ ਜੀ ਮੈਂ ਕ੍ਰਮਿਣ ਜਾਣਾ ਹੈ।

ਧਿਤਾ - ਕ੍ਰਮਿਣ ਕਿਥੇ ਜਾਣਾ ਹੈ?



Topic..... Date.....

ਸ਼ਾਮ - ਧਿਤਾ ਜੀ ਕਮੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਨਾਲ ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜਾਣ ਹੈ।

ਧਿਤਾ - ਅਮ੍ਰਿਤਸਰ ਕਿਸ ਸਥਾਨ ਤੇ ਜਾਣਾ ਹੈ ?

ਸ਼ਾਮ - ਹਰਿਮੰਦਰ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਜਲ੍ਹਿਕਾ ਵਾਲੇ ਥਾਮ।

ਧਿਤਾ - ਬਹੁਤ ਵਧੀਕਾ ਖੁੱਠੇ, ਜਾਉ।

ਸੁਚਨਾ

ਸੁਚਨਾ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਵਿਸ਼ਾ ਹੈ ਜੋ ਘੱਟ ਸੁਖਦਾ ਵਿਚ ਅਤੇ ਉਚਿਤ ਤਾਮਾ ਵਿਚ ਦਿਤੀ ਗਈ ਜਾਣਕਾਰੀ ਹੈ। ਇਸਨੂੰ ਇਸਾ ਵਾ ਇਹ ਛੋਟੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦਿਤੀ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਹੈ। ਸੁਚਨਾ ਦਾ ਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਇਕ ਤੋਂ ਵਧੇ ਸੋਚਾਂ ਅੱ ਜਾਣਕਾਰੀ ਪਹੁੰਚਾਉਣਾ ਹੈ।

ਸੁਚਨਾ ਲਿਖਣ ਸਮੇਂ ਧਿਕਾਨਯੋਗ ਗੱਲਾਂ :

1. ਸੁਚਨਾ ਕਿਸੇ ਵਿਕਰਤੀ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਦੀ ਹੈ।
2. ਸੁਚਨਾ ਲਿਖਦੇ ਸਮੇਂ ਇਸਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਨੂੰ ਧਿਕਾਨ ਵਿਚ ਰੱਖਿਕਾ ਜਾਦਾ ਹੈ।
3. ਸੁਚਨਾ ਲਿਖਣ ਸਮੇਂ ਸੀਮਾ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਧਿਕਾਨ ਵਿਚ ਰੱਖਿਕਾ ਜਾਦਾ ਹੈ।
4. ਸੁਚਨਾ ਲਿਖਣ ਸਮੇਂ ਵਿਸ਼ੇ ਦੀ ਉਲੰਘਣਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾਦੀ।
5. ਡਾਮਾ ਸਕੂਲ ਅਤੇ ਸਪੋਰਟ ਰੂਪ ਵਿਚ ਵਰਤੀ ਜਾਦੀ ਹੈ ਅੱਥੇ ਸੁਖਦਾ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾਦੀ।

ਉਦਾਹਰਣ :

Topic.....

Date.....

ਦੇ. ਐਮ. ਕਾਲਜ ਆਫ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਖੰਨਾ

ਮਾਰੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਸੂਚਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਾਰੇ ਵਿਦਿਆ-
ਰਥੀ 21-3-2018 ਤੋਂ ਯਹਿਲਾ ਫੀਸ ਜਮਾਂ ਕਰਵਾਉਣ।

ਮਿਤੀ -----

18-3-2018

ਫੀਸ ਜਮਾਂ ਕਰਵਾਉਣ ਲਈ

ਸੂਚਨਾ।

ਵਾਚ

ਵਾਚ ਕਿਰਿਆ ਦਾ ਉਹ ਰੂਪ ਹੈ ਜਿਸਤੇ ਯਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ
ਵਾਚ ਵਿਚ ਕੋਈ ਖੁਧਾਨ ਹੈ - ਕਰਤਾ, ਕਰਮ ਜਾਂ ਭਾਵ। ਜਿਸ
ਰੂਪ ਤੋਂ ਯਤਾ ਲੱਗੇ ਕਿ ਕੀਤੇ ਗਏ ਕੰਮ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਕਰਤਾ ਹੈ ਜਾਂ
ਕਰਮ ਹੈ, ਉਸਨੂੰ ਵਾਚ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ।

ਵਾਚ ਦੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ

ਕਰਤਰੀ
ਵਾਚ

ਕਰਮਣੀ
ਵਾਚ

ਭਾਵ
ਵਾਚ

1. ਕਰਤਰੀ ਵਾਚ:

ਜਦੋਂ ਵਾਕ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਕਰਤਾ ਹੋਵੇ, ਉਸਦੀ
ਕਿਰਿਆ ਤੇ ਉਸਦਾ ਯਤੁ ਕਰਤਰੀ ਵਾਚ ਵਿਚ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਜਿਵੇਂ-
'ਅਸੀਂ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਾਂ'। ਵਾਕ ਵਿਚ 'ਅਸੀਂ' ਕਰਤਾ ਹੈ।

2. ਕਰਮਣੀ ਵਾਚ:

Topic.....Date.....

ਜੇ ਟਾਕ ਦਾ ਫਿਸ਼ਾ ਕਰਮ ਹੋਵੇ ਉਮਰੀ
ਵਿਕਿਕਾ ਤੇ ਉਮਰਾ ਯਾਤੁ ਕਰਮਣੀ ਫਾਚ ਵਿਚ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।
ਜਿਵੇਂ 'ਯੁਮਤਕ ਸਾਖੋ ਧੜੀ ਗਈ।'

੩. ਭਾਵ ਟਾਕ :

ਜੇ ਟਾਕ ਦਾ ਫਿਸ਼ਾ ਨਾ ਕਰਤਾ ਹੋਵੇ ਨਾ ਕਰਮ
ਸਗੋਂ ਭਾਵ ਹੋਵੇ, ਤਾਂ ਉਮਰੀ ਕ੍ਰਿਕਾ ਅਤੇ ਉਮਰਾ ਯਾਤੁ ਭਾਵ ਟਾਕ ਵਿਚ
ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ 'ਬਾਲੀ ਜੋਖ ਲਕਿਕਾ ਨਕੀ ਜਾ ਸਕਦਾ।'

ਕਾਰਕ

ਕਿਸੇ ਇਕ ਟਾਕ ਵਿਚ ਨਾਏ ਜਾਂ ਯਕੁਨਾਏ ਦਾ ਹੋਰਨਾ ਸੁਖਦਾ ਨਾਲ
ਸੰਬੰਧ ਬੁਗਟ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਰੂਪਾਂ ਨੂੰ 'ਕਾਰਕ' ਕ੍ਰਿਕਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।
ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸੰਬੰਧਕਾਂ ਨਾਲ ਇਹ ਸੰਬੰਧ ਬੁਗਟ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਕਾਰਕ ਕ੍ਰਿਕਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਕਾਰਕ ਦੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ

1. ਕਰਤਾ ਕਾਰਕ :

ਜਿਹੜਾ ਕੰਮ ਟਾਕ ਦੀ ਵਿਕਿਕਾ ਤੋਂ ਬੁਗਟ
ਹੋਵੇ, ਉਸਦੇ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਆਖਿਕਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਯਹ ਉਹ ਸੁਖਦ
ਦਾ ਰੂਪ ਨਾਏ ਹੋ ਕਰਕੇ ਉਹ 'ਕਰਤਾ' ਅਖਵਾਉਂਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ 'ਅਮਨ
ਨੇ ਕੋਈ ਖਾਧੀ' ਟਾਕ ਵਿਚ 'ਅਮਨ' ਕਰਤਾ ਕਾਰਕ ਹੈ।

2. ਕਰਮ ਕਾਰਕ :

ਕਿਸੇ ਟਾਕ ਦੀ ਵਿਕਿਕਾ ਦੇ ਕੰਮ ਦਾ ਬੁਗਟ ਕਰਤਾ
ਤੋਂ ਛੁੱਟ ਜਿਸ ਦੂਜੇ ਨਾਏ ਜਾਂ ਯਕੁਨਾਏ ਉਤੇ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਉਹ 'ਕਰਮ ਕਾਰਕ'
ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਵੇਂ - 'ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਨੇ ਦੁੱਧ ਪੀਤਾ, ਉਸਨੇ ਫਕੀਰ ਨੂੰ ਕੋਈ ਦਿੱਤੀ।'
ਯਹਿਲੇ ਟਾਕ ਵਿਚ 'ਦੁੱਧ' ਤੇ ਦੂਜੇ ਟਾਕ ਵਿਚ 'ਫਕੀਰ' ਨੂੰ ਤੇ 'ਕੋਈ'
ਕਰਮ ਕਾਰਕ ਹਨ।

Topic.....

Date.....

੩. ਕਰਣੇ ਕਾਰਕ:

ਜਿਸ ਸਾਧਨ ਆਇ ਨਾਲ ਵਾਕ ਦਾ ਕਰਤਾ ਚਿਹਿਤਾ
ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਉਸਨੂੰ ਕਰਣੇ ਕਾਰਕ ਆਖਦੇ ਹਨ ਜਿਵੇਂ - ਅਧਿਆਪਕ
ਨੇ ਲੜਕਿਆਂ ਨੂੰ ਸੋਟੀ ਨਾਲ ਕੁਟਿਆ।

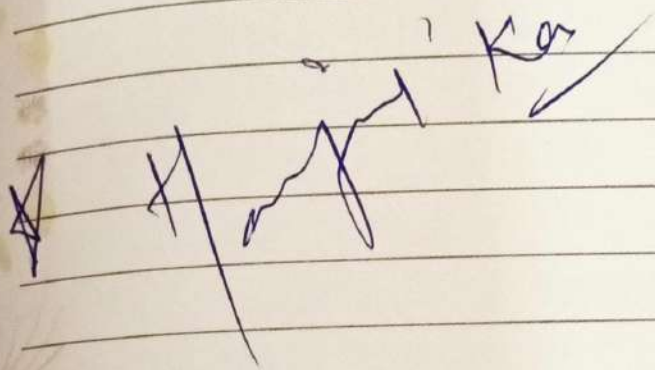
ਸੋਹਣ ਨੇ ਸੋਨੀ ਦੁਆਰਾ ਸੋਹਣ ਦੁਆਰਾ ਸੋਇਮ ਤੇਜ਼ਿਆ
ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਾਂ ਵਿਚ 'ਸੋਟੀ ਨਾਲ' ਤੇ 'ਸੋਹਣ ਦੁਆਰਾ' ਕਰਣੇ ਕਾਰਕ ਹਨ।

Topic.....Date.....

ਹਵਾਲਾ ਪ੍ਰਮਾਣਾਂ:

ਡਾ. ਇੰਦਰਦੇਵ ਸਿੰਘ ਨੰਦਰਾ " ਪੰਜਾਬੀ ਤਾਮ੍ਹਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤ
ਕਾ ਪਿਛਾਪਣ "

੧-10 [ਅਜੋਕੀ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਅਤੇ ਲੇਖਕਾਂ]
ਸੋਧਿਆ ਸੰਸਕਰਣ



SESSION - 2019-21
Topic..... Date.....

A.S. COLLEGE OF
EDUCATION, KALAL
MAJRA

SCHOOL MANAGEMENT

TOPIC :- Meaning, Objective
and Principle of Supervision
and role of Administration

SUBMITTED TO:-

Prof. Harjeet
Kaur

SUBMITTED
BY:-

SHRUTI

B.Ed

Supervision

Introduction:-

Supervision or inspection is regarded as the Backbone of an educational system. It is a service provided by the state, to improve the working of school. Supervision and inspection are the different things, but there is not such difference between the two. The word 'inspection' is very popular in school. Those who inspected the school works, were called inspectors, Inspector was regarded as a powerful officer. In Punjab there were District Inspector of school and Divisional Inspector of schools. Now they are designed as District Education officer and Circle Education officer.

The modern time demands change in the system of inspection. Some states have already brought about this change while the others have started working on it. In this age of democracy, only democratic procedures and practice should be followed. Old methods of inspection are changed now and still more reform is needed in this direction.

DATE _____

Meaning of Supervision:-

Literal meaning:- Literally means expert views on supervision. Broadly looks on 'vision' - 'vision'. It means part of modern education. It is an inseparable part of modern education. It provides direction and guidance to the persons working in the field of education.

Definitions:-

acc. to Laimbal Wiles, "Supervision is a service activity that exists to help teacher to do their jobs better."

Adam and Dicky, "Supervision is a planned programme for improvement of institutions."

View of John A. Barry, "Good supervision is always concerned with the development of teacher the growth of the pupil and improvement of the teaching learning process."

Need of Supervision and Inspection:-

Supervision is the backbone of a good educational system.

The Indian Education Commission remarks on the improvement of inspection. They are authority, present and obvious. A school

System can be no more elastic or dynamic than the inspectors will let it be.
Maintaining Standards: - There is a rapid expansion of education & it has become very essential to maintain its standard. So many educational facilities are now available to universalise education.
Solving and the headmaster have to face many problems in every educational programme.
Useful Involvement: - There is no dearth of workers and staff people in the school.
Development: - Inspection is needed for the continuous development and progress of the school.

AIMS OF SUPERVISION

Leadership: - To provide professional leadership to the educational workers.
Guidance: - To provide guidance to teachers and the headmaster in all instructional programme.
Providing Material equipment: - To provide material equipment to the school - schools are often short of material equipment. The supervision can help in meeting this requirement of the school.
To specify educational objective of the school: -

Supervision clarifies and explains the educational objectives to be achieved.

Major Function of Supervision:-

- Developing curriculum
- Providing equipment
- Providing leadership
- Improving quality of Teaching
- Providing activities
- Maintenance of school records
- Promoting professional growth of Teachers
- Bringing co-ordination among different schools of area.
- Providing better facilities and Service conditions to the Teachers.
- Removing difficulties
- Organising educational conferences.
- experimenting with new educational ideas and practices.

Principles of Supervision:-

Introduction:- A Good Supervision is essential for the success of modern educational systems. Principles of effective supervision are obtained both from philosophy, policies, plans and values. Science helps in solving problems and deriving practical conclusions. Principles of effective supervision are as under:

Principle of Scientific Basis:-

effective supervision is always based on scientific

Principles - Its emphasis is always on experiment, reliability etc.
 Conclusion
Principles of Professional Growth :-

Good supervision always tries to promote professional growth of teachers. It tries to provide opportunities of professional growth through meetings, conferences, suggestions, workshops, seminars etc.

Principle of Comprehensiveness :- Effective supervision is comprehensive

That is to say it attends to all aspects of school education - material equipment, human equipment, accounts, problems of teachers, students and school etc.

Principle of Creativeness :- Good supervision is creative - It is not

simply restricted to fault finding. It tries to bring out the best in the teachers, seeks their cooperation and inspires them to work for the improvement of education with in the school.

Principle of Democracy :- The principle of Democracy is the most important in new trends of education.

Principle of Sympathy and Co-operation :- Good supervision

is based on the principles of sympathy and co-operation. A supervision can discharge his duties effectively only if he maintains friendly and cordial relationship with teachers and other concerned.

Principle of Progressiveness
 Principle of set Philosophy
 Principle of Assessing the spirit of the school
 Principle of Regularity
 Principle of Planning

Role of Educational Administrators:-

At School Level:-

The administration of high and senior secondary school is under the direction. For the convenience and efficiency the Punjab state is divided into circles or division - Jalandhar Division and Patiala / Nabha Division. Each Division is under an officer called C.E.O. (Circle Education Officer). There are deputy C.E.O.'s. There is a large establishment in the circle education office. In this way, this office like the Directorate is complete in itself at the divisional level. Its establishment conducts the administrative work under its jurisdiction (area). Different districts are associated with it.

In every high school, the headmaster discharge administrative and supervisory function. There is a team of senior teachers to assist him. They help the headmaster to run the school efficiently. This job is not assigned to them by any higher authority. They take up responsibility on

on the basis of their Seniority.

At Block Level:- 1.) To submit the Transfer and promote proposals of teachers and employees ensure that they are being executed.

To send the records of life insurance of retired male / female teacher and other employee to the District Base Edu. officer.

To prepare paybill of male / female teachers and other employees.

The disbursement of salaries in time and maintenance of their service Book.

To prepare the bill of pensions, family pensions and relief pension of all retired male / female

Main findings and key issues for action

Basic information about the school, intake of pupils and areas served, school data and indicators

At District Level:-

Law and Academic functions-

Administrative functions-

Planning and organisation functions-

Preparation of the Budget in the district-

Dealing with financial matters-

conducting the public examinations at

Distribution of printed text books, note

books to all educational institution

Inspection of School

Disciplinary against school which violate

the results regulations
transfer of teacher
seniority lists.
Prepare

AT State Level:-

Planning:- The state government plans educational facilities and programmes. It sets targets for educational achievements.

Development:- The state govt is responsible for all round development of pupils in the field of edu.

Guidance:- The govt. provides guidance to the teachers who need guidance by means of its plans, educational facilities, educational researches and supervisors.

Distribution of Grants:- The state govt allocates a definite part of its budget to the cause of edu.

Curriculum, Text-Books and Examinations:- It specifies curriculum for the school of state, prepares and prescribes text-books.

Supervision:- It also the responsibility of the state to fix up educational standard.

Supr. School inspectors organise regulating with District educational officer to achieve the objectives of department and to secure the co-ordination among the D.E.O in the state.

A. S. College of Education
Assignment
of

PEDAGOGY OF ENGLISH

Submitted to - Harneet Kaur

Submitted by - Navjot Kaur
(2019-21)

Types of Examination

Oral & Written

Assignment of English

Topic :-

- Types of Examination - Oral and written.
- Principles of good question paper,
- Defects in present Examination System.
- and suggestions for Improvement.

Types of Examination

Page: 1

Date: / /

ORIGIN OF EXAMINATION IN INDIA

In his preface to the book 'Examination in Ancient India' (1933), S. Narain observes that the process of examination development began when the Vedas were composed.

Elements of some kind of testing methodology are also traced in the age of Upanishads.

Modern Concept of Examination:

G. Terry, Page and J.B. Thomas, "Examination is (1) assessment of ability, achievement, or present performance in a subject. (2) Instrument of assessment can be long essay or mixed form of assessment.

Meaning of Examination :-

First of all, the term Examination usually refers to a formal set-piece kind of assessment technique. Typically it is worked out on the basis of one or more three-hour question papers.

FUNCTIONS

To evaluate the achievement of students, to measure personality, to measure the efficiency of teachers and of the school, to help in diagnosis, to act as incentive to help prognosis, to provide informality of standard, to help guidance study of every subject, to link schools with world.

Examinations may be classified on the basis of types of questions as follows

1: ESSAY TYPE TESTS

Essay type tests demanding long answers have ever remained the most popular form of written tests of pupil's achievement. The essay test, as opposed to objective test, allows relative freedom of response to a given problem but at the same time requires the students to recall rather than recognize information and to organize and express his ideas clearly and concisely.

→ ADVANTAGES :-

1. They are easy to construct.
2. These bring into prominence the language mastery, expression and subject organisation ability of the pupil.
3. These test pupil's ability to use knowledge.
4. If well constructed, these encourage proper study habits.
5. Students prefer these tests to other tests.

→ LIMITATIONS (DEFECTS) :-

1. Maximum Validity - This means it doesn't bring out proper distinction between bright, good and bad pupils.
2. No objectively - Examiner's mood and when count much at the time of evaluation of the script.

SHORT ANSWER TYPE TESTS :-

This form is gaining favour day by day. There are several positive reasons for this. Questions of this form can be made highly thought provoking.

Moreover, questions can be formed to ask what we actually want to ask. Questions can be related to educational objectives. Its answer are in few sentences. Moreover, short answers are easy to score. A few examples are given below:-

→ ENGLISH :- (1) Name the three questions to which the king wanted answer (Tolstoy's three questions) (2) Briefly describe Phatik's illness (Tagore's The Home coming.)

→ HISTORY :- What contrasting features do the two civilisations of Mohenjo-Daro and Harappa display in respect of ?

- The drainage system.
- Construction of houses.
- Town planning.

→ GEOGRAPHY :- Classify winds on the basis of the duration of the period for which they blow.

Objective Type TESTS :

An objective test is so named because the system of scoring is objective, rather than somewhat subjective as in the case of

an essay test. Several possible responses are generally given for each test item, with usually only one being the correct or best response.

Characteristics of Objective-type tests:-

1. These are free from the opportunities of irrelevant answers.
2. These can easily be scored.
3. These are more valid and reliable.
4. The scoring is quite objective.
5. These have higher diagnostic value.

Forms of Objective - Test:-

1. RECALL TYPE:-

1. Simple Recall tests:- It is a type of test in which the pupil is required to recall answer from his experience in response to a question, a specific direction or a stimulus word or phrase. For example:-

- who was the first Prime-Minister of India?
- who wrote the story 'The Home Coming'?

Completion Tests :- A completion test comprises a series of sentences in which certain important words or phrases have been omitted and blanks are supplied for the pupils to fill in.
For example.

- Jawaharlal Nehru was born in the city of _____
- Indira Gandhi was the first woman _____ of India.

II. Recognition Type :-

1. Multiple choice question/Test :- A multiple-choice test is made up of a number of items each of which carries two or more responses out of which only one is correct or definitely better.

For example

1. Which of these is the normal temperature of human body?
- a. 98.4°C
 - (b) 98.4°R
 - (c) 100°C
 - (d) 98.6°C

2. Matching tests :- A matching test typically consists of two columns, each item in the first column to be paired with a word or phrase in the second column upon some basis suggested.

For Example:-

column A	column B
1. UNICEF	(a) Food and Agriculture Organisation
2. WHO	(b) United Nations International Children's
3. UNESCO	(c) World Health Organisation.
4. ILO	(d) United Nations Educational, Scientific
5. FAO	(e) International Labour Organisation

3. Alternate Response Test :- It is made up of items each of which admits of only two possible responses. The usual form is the familiar true-false test.

For Example

State which of these is true/false:-

- All simple machines increase force.
- In a machine, force is increased if the effort moves a larger distance than the load.

4. Rearrangement test :- It is the type of test in which a list of facts or items may be presented to the students

to arrange in logical, chronological or preferred order.

For example

Rearrange the following items in order of their occurrence.

- First war of independence
- Civil Disobedience.

* Principles of good question Paper

- Objectives
- Need for a systematic approach to the setting of question paper.
- Steps involved in setting a question paper.
- Ability to prepare a good question paper in their subject.

→ Steps involved in question paper preparation:-

- Preparation of a blue print of the question paper.
- Preparation of a model question paper
- Preparation of a marking scheme.
- Decision on the design of the question paper.
- Refining of the question paper.
- Editing of question paper.
- Review of the question paper.

Design of the Question Paper.

- The points to be decided are.
- Weightage given to different forms of questions.
- Weightage to different learning objectives.
- Guidelines regarding the use of options, nature of sections and difficulty in the level of paper.

Blue Print of a Question Paper:-

- Also known as table of specification.
- It is a two dimensional chart which gives placement of different questions.
- The number of questions and the marks allotted and the objectives that are tested by the items like.
- Knowledge, Understanding, Application, Skills.

Preparation of Marking Scheme:-

- The purpose of marking scheme is to assign proportion of marks to different parts of the answer.
- Marking Schemes are of two types:-
- Analytical for objective type and short answer type.
- Global for long answer type.

Refining of the Questions:-

- Ask the following questions.
- Does the question test an important learning outcome?
- It is based on a predetermined objective.
- Language of the question.
- clarity of the directions.

Editing the Questions:-

- Check grouping of the question according to objectives, form of questions, content area etc.
- Numbering questions, Instructions for administration.

Review of question Paper:-

It is done with the help of the check list. The final step is to ensure confidentiality. It is by sending the rough sheets to the university or destroying them as per instructions.

★ Defects in present Examination System:-

1. System of evaluation is limited to written examination.
2. Lack of desired level of validity and reliability.
3. Only cognitive domain is measured - memorisation occupies dominant place.

4. Questions are few measuring comprehension and application.
5. Analysis, synthesis and evaluation hardly find a place in the question paper.
6. The test items lack variety (only essay type).
7. Evaluation of co-scholastic aspects like interests, attitudes, values etc.
8. personal social qualities like regularity, punctuality, discipline, co-operation and leadership etc. are missing.
9. Examinations lack definite aims.
10. Elements of chance.

Suggestions for Improvement:-

1. In order to reform the examination system in our country, the medalian commission lead stress on the use of objective, type test and internal assessment.
2. Effective use of the evaluation process by teachers, students and parents.
3. Improvement in the conduct of examination.
4. Use of grades in place marks.
5. Introduction of the semester system from the secondary stage in a phased manner.

A.S. College of Education
Kalal majra khanna.

Session-2020-
2022

Sessional work

Sub-Reading and reflecting on
text F-4.5

Topic - Analysis of two articles

Submitted to: - Mrs Harneet Kaur

Submitted by: Sonjeeta Sharma.

Analysis of two articles
from a newspaper.

Article - 1

PAGE 1

DATE

Name of Newspaper - Punjab Kesari

Author's Name - Prof. Manoj Dogra

Date of Publishing - 5-04-22

Heading of the article - बढ़ती महंगाई से आम जनता त्रस्त

Key words :

कोरोना	पेट्रोल-डीजल
महंगाई का दौड़पत्र	मजदूर, व्यापारी
अर्थव्यवस्था	बढ़ती जनसंख्या
सिलेक्टर	बैरौजगारी

Analysing : Discussion of Material Style :-

लेखक ने इस लेख में इस बात को उल्लेख किया है कि कोरोना के कहर के बाद जहां देश अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने ही लगा था जिसमें कुछ चुनवों में भी राहत मिली कि चीजे अस्ता होगी परन्तु चुनवों के बाद ऐसा घटीत हो रहा है कि जैसे सरकार ने तो 'महंगाई का दौड़पत्र' जारी कर दिया हो। गर्मी बढ़ने के साथ-साथ महंगाई भी आसमान छू रही है। कोरोना के बाद जहां लोगों को लगता था महंगाई कम होगी परन्तु यह दुगुनी गति से बढ़ रही है।

जैसे सिलेक्टर का मूल्य भाग की तरह बढ़ रहा है। पेट्रोल-डीजल की मानी बौड़ लगी है कि किसानों का आंकड़ा होगा। मध्यम चाहे उच्च वर्ग सबका खजत कोरोना चाकसी से चौपट हुआ।

अभी धीरे-2 मध्यम वर्ग की पक्ष पर स्थिति जाने ही लगी थी कि जनता पर महंगाई का नैसा द्रपत हुआ कि सभी वर्ग विचलित और परेशान हो गए।

संविधानों के दाम आभमान इ रहे हैं। दूसरी वस्तुओं के दाम धीरे-धीरे पड़च से बहर हो गये हैं। अगर मंहगाई दिन प्रतिदिन ऐसे ही बढ़ती रही तो भारत का हाल भी भी लकां जैसा ही हो जायगा। स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि दिहाड़ी पर गुजर कर करने वाले लोगों की रोजी रोटी पर संकट आ चुका है।

2. EFFECTIVENESS OF THE TOPIC :-

लेखक इस लेख में बताना चाह रहा है कि जहां बढ़ती मंहगाई से व्यापारी वर्ग, किसान-बगवान, मजदूर सब परेशान हैं। आज पीट्रोल-डीजल का दाम 100 के पार पड़च चुका है। आम आदमी परेशान है। आज बाजार व व्यापार में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसके मूल्य में वृद्धि न हुई हो।

3. Discussion of the Topic Treatment :-

इस लेख में लेखक पूरे समाज के वर्गों के साथ सम्बन्धित है। क्योंकि मंहगाई का सारे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जिस कारण समाज को कई तरह की कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अगर मंहगाई पर लगाव न लगी तो एक समय ऐसा आया जब लगान लगाना तो दूर, मूल्यों को नियंत्रित करना भी चुनौती पूर्ण हो जायगा।

4. Language Discussed :-

लेखक ने आसान भाषा का प्रयोग किया है लेख में लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए। जो सभी लोगों को आसानी से समझ में आ जाय। उन्होंने वर्तमान समय में जनता के हित को ध्यान में रखते हुए कहा है कि भारत सरकार को वस्तुओं की मूल्यावृद्धि पर कड़े निर्णय लेने चाहिए।

5. Is msg Conveyed the readers through this article :-

हाँ लेखक अपनी बातों और विचारों

के द्वारा अपना संकेत आम जनता भ्रष्टाचार लोभी तक पहुंचाने में सफल रहा है। अने अने अने भाषा का प्रयोग किया है। सरकार द्वारा ऐसे कदम उठाए जाने चाहिए जो महंगाई को रोक लगाने पर लोगों के हितों के लिए कार्य करें। ताकि लोग महंगाई की वजह से बेरोज़गार न हों और उनका जीवन उधल-पुधल न हो और उनको जीवन व्यतीत करने के लिए परिवर्तनों का सामना न करना पड़े।

Article -2

शहीदी दिवस 8 अप्रैल

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक 'मंगल पांडे'

अमर शहीद मंगल पांडे का जन्म 19 जुलाई, 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा में दिवाकर पांडे और माता अभय रानी के घर हुआ। हालांकि, कई इतिहासकारों का कहना कि उनका जन्म फैजाबाद जिले की अकबरपुर तहसील के सुरहूरपुर गांव में हुआ था।

युवावस्था में रोजी-रोटी की मजबूरी में 1849 में 22 वर्ष की आयु में ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में भर्ती हुए। इन्हें बैरकपुर की सैनिक छावनी में '34वीं बंगाल नेटिव इंफैंट्री' में शामिल किया गया।

ईस्ट इंडिया कम्पनी की दमनकारी नीतियों ने लोगों के मन में अंग्रेजी हुकूमत के प्रति पहले ही नफरत पैदा कर दी थी। अंग्रेज अधिकारियों द्वारा भारतीय सैनिकों पर अत्याचार तो हो ही रहा था लेकिन हद तब हो गई जब 9 फरवरी, 1857 को भारतीय सैनिकों को पैटन 1853 एनफील्ड बंदूकें दी गईं। यह 0.577 कैलीबर की बंदूक पुरानी व कई दशकों से उपयोग में लाई जा रही ब्राऊन बैस बंदूक के मुकाबले में शक्तिशाली और अचूक थी।

नई बंदूक में गोली दागने की आधुनिक प्रणाली (प्रिकशन कैप) का प्रयोग किया गया था परंतु बंदूक में गोली भरने की प्रक्रिया पुरानी थी। इसमें कारतूस भरने के लिए दांतों से काटकर खोलना पड़ता था। कारतूस, जिसे दांत से काटना होता था, उसके ऊपरी हिस्से पर चर्बी होती थी जो उसे सीलन से बचाती थी।

भारतीय सैनिकों में यह बात फैल गई थी कि कारतूस की चर्बी सूअर और गाय के मांस से बनाई गई है। यह बात हिन्दुओं के साथ-साथ मुस्लिमों की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ थी। इस्तेमाल के दौरान जब इसे मुंह

लगाने के लिए कहा गया तो मंगल पांडे ने ऐसा करने से मना कर दिया और साथी सैनिकों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने 'मारो फिरंगी को' नारा दिया जिसके बाद अंग्रेज अधिकारी गुस्सा हो गए और 29 मार्च, 1857 को उन्हें सेना से निकालने, वर्दी और बंदूक वापस लेने का फरमान सुनाया गया जिससे मंगल पांडे आग बबूला हो गए और ब्रिटिश अफसरों की भारतीयों के प्रति क्रूरता ने आग में घी का काम किया।



उसी दौरान एक अंग्रेज अफसर उनकी तरफ बढ़ा लेकिन मंगल पांडे ने उसे वहीं ढेर कर दिया। उन्होंने साथियों से मदद करने को कहा लेकिन कोई आगे नहीं आया। वह फिर भी डटे रहे और जब किसी भारतीय सैनिक ने साथ नहीं दिया तो उन्होंने अपने ऊपर भी गोली चलाई लेकिन निशाना चूक गया। हालांकि, वह सिर्फ घायल हुए और अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया।

उनका कोर्ट मार्शल किया गया और बिना किसी दलील-अपील के फांसी का हुक्म सुना दिया गया लेकिन 1857 की क्रांति के इस नायक से अंग्रेज इतने खौफजदा हो गए कि फांसी के लिए मुकर्रर तारीख से 10 दिन पहले ही उन्हें चुपके से 8 अप्रैल, 1857 को पश्चिम बंगाल के बैरकपुर में फांसी देकर शहीद कर दिया।

फिरंगियों को डर सता रहा था कि अगर जल्द से जल्द मंगल पांडे को फांसी नहीं दी गई तो उनकी भड़काई चिंगारी पूरे भारत में विद्रोह की आग को भड़का सकती थी। 1857 की क्रांति भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम था जिसकी शुरुआत मंगल पांडे के विद्रोह से हुई थी।

—सुरेश कुमार गोयल

Article - 2

Title - प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नायक 'मंगल पांडे'

Author - Mr. Suresh Kumar Goel.

Publication Information.

Name of the Newspaper - पंजाब केसरी

Date of Publication - 5-04-22

Identify Author's purpose :- इस लेख में लेखक

अमर शहीद 'मंगल पांडे' के स्वतंत्रता प्रति संग्राम के बारे में
आम लोगों को जाबूत करवाना चाहता है। उनके जन्म,
बचपन, अंग्रेजों द्वारा भारतीय सैनिकों पर अत्याचार के बारे
में अवगत करवाना चाहता है।

Key words :-

इस्ट इण्डिया कंपनी
उपरी बंगाल नैटिव इफैक्ट्री
पैनल 1853 मन्फील्ड बंदूके
धार्मिक भावनाएं
'माही पिरंगी को नारा

6. कौरु मारुलि
7. बैरकपुर में फांसी
8. 1857 की क्रांति

Analysing :- लेखक द्वारा इस लेख में बताया गया है कि अमर शाहीक मंगल पांडे का जन्म 19 जुलाई, 1897 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा में दिवाकर पांडे के घर हुआ। कुछ इतिहासकारों ने उनका जन्म फैजाबाद में गुरुद्वारा गांव में बताया। रोजी-रोटी की मजबूरी में वे 1849 में 22 वर्ष की आयु में इस्ट-इंडिया कम्पनी की सेना में भर्ती हुआ। इन्हीं ब्रिटेन के सैनिक छावनी में अपनी बंगाल नैटिव इन्फैंट्री में शामिल किया गया।

*** अंग्रेजी हुकूमत के प्रति नफरत :-** लेखक द्वारा बताया गया है कि इस्ट इंडिया कम्पनी की दमनकारी नीतियों ने लोगों के मन में अंग्रेजी हुकूमत के प्रति नफरत पैदा कर दी थी। सैनिकों पर अत्याचार तो हो रहा था पर एक तब ही गई जब 9 फरवरी 1857 को भारतीय सैनिकों को पैटन 1853 फुनफोर्ड बंदूक दी गई। यह 0.577 कैलिबर पुरानी व कई दशकों से उपयोग में लंबी जा रही ब्राउन बॉक्स बंदूक के मुकाबले में अविश्वाली थी। नई बंदूक में गोली फगने के लिए पिकानु कैप का प्रयोग होता था। इन्हीं कारतूस भरने के लिए दंतों से चालकर खोलना पड़ता था। उसके उपरी हिस्से पर चर्बी थी जो कि शूअर व गारा के मांस से बनाई गई है। यह हिन्दु मुस्लिमों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ था।

*** मंगल पांडे की फांसी की सजा :-** मंगल पांडे ने एक अंग्रेजी अफसर को बेर कर दिया जब उन्होंने आप्तियों को मरद के लिए कहा तो किसी ने साथ नहीं दिया वे अकेले डरे रहे। उनका कोर्ट मार्शल किया गया व फांसी की सजा तबूक से 10 दिन पहले चुपके से 8 अप्रैल 1857 को बरेली में दी गई। व शहीद कर दिया गया।

Discussion of the topic and Language discussed :-

लेखक ने बहुत ही सरल शब्दों में मंगल

पांडे की निडरता, देशभक्ति व साहस को एक रूप प्रदान कर लोगों के अमन प्रसन्न किया है। फिक्कियों को डर सता रहा था कि अगर 'मंगल पांडे' को फांसी न की गई तो विद्रोह की आग पूरे भारत को भड़का सकती है।

* Message Conveyed to the readers through this article :-

हैं लेखक अपनी बातों से संदेश पहुंचाने में सफल रहा है कि मंगल पांडे ने अंग्रेजों की दमनकारी नितियों के विरुद्ध प्रदर्शन किया। 1857 की क्रांति भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम था जिसकी शुरुवात 'मंगल पांडे' के विद्रोह से हुई थी।